सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नव इन्द्रप्रस्थ

2026 ★ अंक - 6



कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट
नई दिल्ली - 110002



संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति का निरीक्षण कार्यक्रम (07.05.2025)



हिंदी पखवाड़ा - 2025 के समापन समारोह के दौरान विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी), प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति के सदस्यों के साथ

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नव इन्द्रप्रस्थ

अंक - 06

वर्ष - 2026

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य

ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट

नई दिल्ली - 110002

मूल्यः राजभाषा के प्रति निष्ठा

नव इन्द्रप्रस्थ

2026 ★ अंक - 6

पत्रिका परिवार

संरक्षक



डॉ. पवन कुमार कोंडा
प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा)

परामर्शदाता



श्री योगेन्द्र कुमार
उप निदेशक (प्रशासन)

संपादक



श्री राजबीर
सहायक निदेशक (रा.भा.)

संपादन सहयोग



श्री मोनू जांगिड़
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री जितिन कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी





श्री चतुर्भुजी नाथ यादव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री अनिल कुमार
लेखापरीक्षक



कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली - 110002

आवरण पृष्ठः

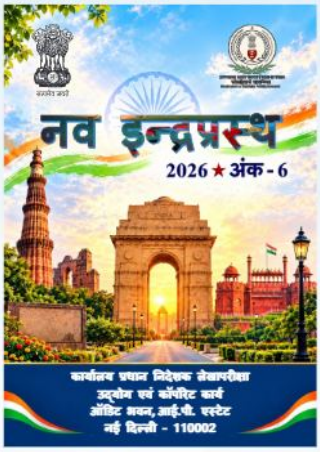

पत्रिका

वर्ष 2026, अंक-6

संरक्षक

डॉ. पवन कुमार कोंडा

प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा)

परामर्शदाता

श्री योगेन्द्र कुमार

उप निदेशक (प्रशासन)

संपादक

श्री राजबीर

सहायक निदेशक (रा.भा.)

संपादन सहयोग

श्री मोनू जांगिड़, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री जितिन कुमार, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री चतुर्भुजी नाथ यादव, स.ले.प.अ.

श्री अनिल कुमार, लेखापरीक्षक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी.एस्टेट
नई दिल्ली - 110002

विषय सूची

क्र. सं.	रचना/लेख का शीर्षक	रचनाकार/लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
1	मेरा नव जीवन	हेमलता शर्मा	9
2	हिंदी का जन्म-दिन	रजनीश कुमार	10
3	कान की आत्मकथा	मालती देवी	11
4	मेरी पहली आई.सी.यू. यात्रा	अनिल कुमार	14
5	एक मन का अंतरद्वंद - "मैं कौन हूँ? "	आनन्द मठपाल	15
6	सरकारी नौकरी का सपना	अभिषेक मीना	18
7	बायोमैट्रिक का युग - संघर्ष और उम्मीद	हेमराज मीना	19
8	पे-कमीशन का इंतजार	भूपेन्द्र राणा	21
9	गाँव एक पारितंत्र	मानवेन्द्र झा	22
10	मैं सड़क हूँ	अनिल कुमार	23
11	मध्यमवर्गीय लोगों के बड़े सपने	अमित कुमार	26
12	स्मार्टफोन स्क्रीन में खोता बचपन...	सत्यम गुप्ता	30
13	वैश्विक पहचान की ओर बढ़ता लोक आस्था का महापर्वः छठ पूजा	राजन कुमार	33
14	प्यास की कीमत	अमित कुमार	36
15	विद्यार्थी काल - चरित्र निर्माण काल	हेमलता शर्मा	42
16	लेखापरीक्षा की भाषा और अनुवाद की परिभाषा	मोनू जांगिड़	44

नोटः इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। नव इन्द्रप्रस्थ परिवार का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता, उसमें प्रस्तुत तथ्यों तथा आंकड़ों की प्रमाणिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

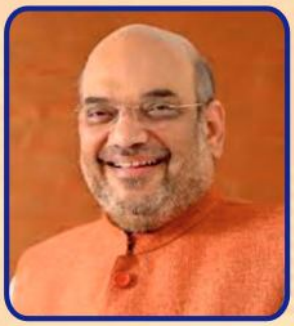

प्रिय देशवासियो,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

भाषा चंदन की उस सुगंध के समान है, जो हमारी संस्कृति, संस्कार, ज्ञान, परंपरा और राष्ट्रीय चेतना की जीवंत धारा बन जाती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में हमारी भाषाएँ, उपभाषाएँ और बोलियाँ हमारी सभ्यता की स्मृति, लोकजीवन की संवेदना और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला हैं। स्वभाषा व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़ती है और उसे आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों, अनुभवों और आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने की शक्ति देती है।

हमारा भारत भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि की अनुपम भूमि है। यहाँ प्रत्येक भाषा अपने साथ एक इतिहास, लोकपरंपरा और जीवन–दृष्टि लेकर चलती है। यही भाषाई बहुलता भारत की 'विविधता में एकता' की भावना को सशक्त बनाती है। हिंदी ने इसी विविधता के बीच संवाद, संपर्क और समन्वय की भाषा के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों और समुदायों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी का विकास भी तभी सार्थक है, जब वह सभी भारतीय भाषाओं के सम्मान, संरक्षण और संवर्धन के साथ आगे बढ़े। हिंदी किसी भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं के बीच आत्मीय संवाद और राष्ट्रीय एकात्मता की महत्वपूर्ण कड़ी है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने भाषा की वास्तविक शक्ति को जनता के जीवन और उसके सहज प्रयोग से जोड़ा था। उनका यह भाव हमें स्मरण कराता है कि कोई भी भाषा तभी जीवंत बनती है, जब वह समाज के सामान्य जन के श्रम, संवेदना, आकांक्षा और आत्मविश्वास की भाषा बने। हिंदी की शक्ति भी इसी लोक–संपर्क, सरलता, सहजता और व्यापक स्वीकार्यता में निहित है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान **स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा** के विचारों ने राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा दी। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने यह अनुभव किया था कि स्वभाषा और स्वाभिमान के बिना स्वराज की संकल्पना अधूरी रहेगी। हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं ने जन–जागरण, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के विचार को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी ने देश के अनेक हिस्सों में स्वतंत्रता आंदोलन के विचारों, संदेशों और संकल्पों को सामान्य जन तक पहुँचाने की सशक्त संपर्क भाषा के रूप में कार्य किया।

यह वर्ष राष्ट्रीय गीत **'वंदे मातरम' के 150 वर्षों के स्मरण** का भी विशेष अवसर है। आज जब देश **'विकसित भारत@2047'** के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब 'वंदे मातरम' का भाव हमें यह प्रेरणा देता है कि विकास की यात्रा अपनी विरासत, अपनी भाषाओं, अपनी स्वभाषा और अपने सांस्कृतिक आत्मविश्वास के साथ ही सार्थक होती है।

14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक यात्रा का महत्वपूर्ण क्षण था। यह निर्णय **शासन को जनसामान्य के अधिक निकट** लाने, **लोक–संवाद को सशक्त** करने और **भारतीय भाषाओं के प्रति राष्ट्रीय सम्मान को अभिव्यक्त** करने का प्रतीक था। हिंदी दिवस हमें इसी ऐतिहासिक संकल्प का स्मरण कराता है और राजभाषा हिंदी को जनसेवा, सुशासन और राष्ट्रीय संवाद का प्रभावी माध्यम बनाने की प्रेरणा देता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अमृतकाल का वर्तमान दौर भारत की सांस्कृतिक विरासत, सभ्यतागत आत्मविश्वास और आधुनिक प्रगति के अद्भुत समन्वय का कालखंड है। प्रधानमंत्री जी का **'विकास भी, विरासत भी'** का मंत्र हमें यह दिशा देता है कि आधुनिक भारत का निर्माण अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए ही सशक्त रूप से किया जा सकता है। गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का अर्थ यह भी है कि हम अपनी भाषाओं में सोचने, काम करने, सृजन करने और विश्व से संवाद करने का आत्मविश्वास विकसित करें। **इस दिशा में राजभाषा हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।**

इसी दृष्टि से राजभाषा विभाग द्वारा तकनीकी और संस्थागत स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित 'भारती'; भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को सहज बनाने की दिशा में एक दूरदर्शी प्रयास है। वर्ष 2024 में स्थापित **'भारतीय भाषा अनुभाग'** केंद्र और राज्यों के बीच पत्राचार तथा प्रशासनिक संवाद को भारतीय भाषाओं में अधिक सुगम बना रहा है। इसी प्रकार, 8.27 लाख से अधिक प्रविष्टियों वाला **'हिंदी शब्द सिंधु'** डिजिटल शब्दकोश हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की शब्द–संपदा को जोड़ते हुए ज्ञान–साझाकरण का समृद्ध माध्यम बन रहा है। ये पहलें हिंदी को तकनीक, प्रशासन और ज्ञान–विनिमय की आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक सक्षम बना रही हैं।

हिंदी दिवस केवल भाषा के प्रति गौरव व्यक्त करने का अवसर नहीं, बल्कि स्वभाषा में अपना कार्य, चिंतन और सृजन करने के लिए संकल्पित होने तथा संविधान–निर्माताओं के प्रति कृतज्ञ श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर भी है। आइए, इस पावन अवसर पर हम हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं को विकसित, आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बनाने का संकल्प लें।

आप सभी को पुनः हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2026

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा) का संदेश...

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नव इन्द्रप्रस्थ' का छठा अंक (2026) प्रकाशित होने जा रहा है।

हमारा कार्यालय उद्योग और कॉर्पोरेट कार्यों की लेखापरीक्षा के माध्यम से देश के वित्तीय विकास और पारदर्शिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस उत्तरदायित्व को निभाते हुए अपने दैनिक प्रशासनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी को अपनाना हमारा संवैधानिक और नैतिक कर्तव्य है।

'नव इन्द्रप्रस्थ' का यह अंक हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की कार्य-निष्ठा के साथ-साथ उनकी रचनात्मक सोच को भी सामने लाता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कार्यालय में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने और दैनिक कार्यों में इसका सहज उपयोग करने के लिए सभी को प्रेरित करेगी।

मैं संपादक मंडल और इस अंक के लिए प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

पवन

डॉ. पवन कुमार कोंडा
प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा)

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



उप निदेशक (प्रशासन) का संदेश...

'नव इन्द्रप्रस्थ' पत्रिका के छठे अंक का प्रकाशन हमारे कार्यालय परिवार के सामूहिक प्रयासों का एक सराहनीय परिणाम है।

एक लेखापरीक्षा कार्यालय के रूप में हमारा कार्य पूरी तरह नियमों और आंकड़ों पर आधारित होता है। ऐसे में, अपने व्यस्त समय से क्षण निकालकर हिंदी में रचनात्मक और ज्ञानवर्धक लेख लिखना हमारे कर्मचारियों की बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाता है। राजभाषा हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारे प्रशासनिक कार्यों को सरल और सुलभ बनाने की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

मैं संपादक मंडल को उनके अथक प्रयासों के लिए साधुवाद देता हूँ जिन्होंने सभी बेहतरीन विचारों को संकलित कर इस पत्रिका को एक आकर्षक स्वरूप दिया है। पत्रिका के सभी पाठकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

श्री योगेन्द्र कुमार
उप निदेशक (प्रशासन)



सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संपादक की कलम से...

'नव इन्द्रप्रस्थ' के छठे अंक (2026) को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए संपादक मंडल अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के विचारों, अनुभवों और साहित्यिक अभिरुचियों का एक जीवंत संकलन है।

इस अंक को तैयार करते समय हमारा मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के व्यावहारिक और सरल रूप को बढ़ावा देना रहा है, ताकि कार्यालयी कामकाज के साथ-साथ रचनात्मक लेखन में भी हिंदी की स्वीकार्यता बढ़े। इसमें तकनीकी, प्रशासनिक और समसामयिक विषयों पर आधारित ऐसी सामग्री को शामिल किया गया है जो ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ बेहद सरल भी है।

हम हमारे आदरणीय संरक्षक (प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा) और परामर्शदाता (उप निदेशक/प्रशा.) के अत्यंत आभारी हैं जिनके निरंतर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से यह अंक संभव हो पाया। साथ ही, उन सभी लेखकों का धन्यवाद जिन्होंने अपनी मूल्यवान रचनाएं हमारे साथ साझा की।

आशा है कि यह अंक आपको पसंद आएगा। आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं का हमें सदैव इंतज़ार रहेगा।

राजबीर
सहायक निदेशक (रा.भा.)



हेमलता शर्मा,
लेखापरीक्षक

मेरा नव जीवन

सुंदर-सा मन सुंदर चितवन सुंदर सा जग प्यारा है।
सुंदर इसकी प्यारी नदियाँ सुंदर जगत नज़ारा है।।

अपने नन्हे पैरों से जब इस दुनिया में आई थी।
अखियाँ बंद किये ही मैंने माँ की गोद जो पाई थी।।

माँ की गोदी पाकर जब मैं मन ही मन मुस्काई थी।
देकर मेरे पटल पर माँ ने एक चुम्बन लहराई थी।।

बिटिया रानी बिटिया रानी सबने मुझे पुकारा है।
माँ का आँचल पाकर मैंने इस दुनिया को निहारा है।।

इस जीवन का यही तो मानो सबसे सुंदर नज़ारा है।
बड़े भाग्य से पाया मैंने यह संसार जो प्यारा है।।

पिता ने दिया दुलार मुझे दादी ने नज़र उतारा है।
दादाजी ने मुझको माना अपनी आँख का तारा है।।

जीवन सबका चमका पाऊं ऐसी रोशनी से भर जाऊं।
चंद्रमा की शीतल छाया में अपने परिवार का मान बढ़ाऊं।।

कुछ तो पुण्य किये है मैंने यह परिवार जो पाया है।
अपने भाग्य पर इतराकर तो नव जीवन यह संवारा है।।

सुंदर सा मन सुंदर चितवन सुंदर सा जग प्यारा है।
सुंदर इसकी प्यारी नदियाँ सुंदर जगत नज़ारा है।।



रजनीश कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी का जन्मदिन

नींद टूटी, आँखें खुली,
गई बाबूजी के पास।
प्यार से चूमा बाबूजी ने कहा,
तुम ही हो राष्ट्र की आस।।

जन्मदिन की बधाई बेटी,
रहो हमेशा हँसती।
पर बाबूजी छोटी तो,
सुबह से ही, कुछ और कहती।।

कहती है खुश हो लो आज,
खूब लगाओ बिंदी।
कल से तो राज मैं ही करूँगी,
समझी दीदी हिंदी।।

यदि सही है तो बाबूजी,
क्यूँ मुझे जन्म दिया।
सभी प्यार करें अंग्रेजी से तो,
क्या मुझे बड़ी हो कर मिला।।

"भाषा" बाबूजी व्यथित हुए,
पर हँसकर हिंदी को समझाया।
बोले बेटा यह न सोचो,
कितनों से तुमने क्या पाया।।

तुम समंदर सी विशाल,
सभी को स्वयं में समाया है।
तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज शब्दों ने,
तुममें ही जगह पाया है।।

कठिन परिस्थितियों में भी अब तक,
अस्तित्व अपना बचाया है।
है धन्य वो सभी मानव,
जिसने मान तुम्हारा बढ़ाया है।।

राष्ट्रभाषा का सम्मान तुम्हें,
सदा मिले, दे रहा आशीर्वाद।
रहे सभ्यता जब तक मनुष्य की,
वह रखे तुम्हें सदा याद।।



मालती देवी,
एमटीएस

कान की आत्मकथा

एक बार अवश्य पढ़े... मन में गुदगुदी होने लगेगी...

मैं कान हूँ...
हम दो हैं...
दोनों जुड़वां भाई...लेकिन...
हमारी किस्मत ही ऐसी है....
कि आज तक हमने एक दूसरे को देखा तक नहीं

पता नहीं..
कौन से श्राप के कारण हमें विपरित दिशा में चिपका कर भेजा गया है...
दुःख सिर्फ इतना ही नहीं है...
हमें जिम्मेदारी सिर्फ सुनने की मिली है...

गालियाँ हों या तालियाँ...
अच्छा हो या बुरा...
सब हम ही सुनते हैं...

धीरे धीरे हमें खूंटी समझा जाने लगा...
चश्मे का बोझ डाला गया,
फ्रेम की डंडी को हम पर फँसाया गया...
ये दर्द सहा हमने...

क्यों भाई..???

चश्मे का मामला आँखों का है
तो हमें बीच में घसीटने का
मतलब क्या है...???
हम बोलते नहीं
तो क्या हुआ, सुनते तो हैं ना...

हर जगह बोलने वाले ही क्यों आगे रहते है....???
बचपन में पढ़ाई में
किसी का दिमाग
काम न करे तो
मास्टर जी हमें ही मरोड़ते हैं...

जवान हुए तो
आदमी, औरतें सबने सुंदर-सुंदर लौंग, बालियाँ, झुमके आदि बनवाकर हम पर ही लटकाये...!!!
छेदन हमारा हुआ,
और तारीफ चेहरे की...!

और तो और...

शृंगार देखो...
आँखों के लिए काजल...
मुँह के लिए क्रीमें...
होठों के लिए लिपस्टिक...
हमने आज तक कुछ माँगा हो तो बताओ...

कभी किसी कवि ने,
शायर ने
कान की कोई तारीफ की हो तो बताओ...
इनकी नजर में आँखे, होंठ, गाल, ये ही सब कुछ है...
हम तो जैसे किसी मृत्युभोज की
बची खुची दो पूड़ियाँ हैं...
जिसे उठाकर चेहरे के साइड में चिपका दिया बस...

और तो और,
कई बार बालों के चक्कर में हम पर भी कट लगते हैं...
हमें डिटॉल लगाकर पुचकार दिया जाता है...

बातें बहुत सी हैं,
किससे कहें...???
कहते हैं दर्द बाँटने से मन हल्का
हो जाता है...

आँख से कहूँ तो वे आँसू टपकाती हैं...
नाक से कहूँ तो वो बहती है...
मुँह से कहूँ तो वो हाय-हाय करके रोता है...

और बताऊँ...

पंडित जी का जनेऊ,
टेलर मास्टर की पेंसिल,
मिस्त्री की बची हुई गुटखे की पुड़िया
मोबाइल का एयरफोन सब हम ही संभालते हैं...

और
आजकल ये नया-नया मास्क का झंझट भी हम ही झेल रहे हैं...
कान नहीं जैसे पक्की खूँटियाँ हैं हम...
और भी कुछ टाँगना, लटकाना हो तो ले आओ भाई...
तैयार हैं हम दोनों भाई...!!!

थोड़ा थोड़ा हँसते रहिये
हमेशा स्वस्थ रहिए।



अनिल कुमार,
कल्याण सहायक

मेरी पहली आई.सी.यू. यात्रा

बैठा था दफ्तर में इक दिन
मेरा ये मन थोड़ा सा घबराया।
ये बदन हुआ पसीने से गीला
मेरा ये तन थोड़ा सा थर्राया।

इक पैकेट भाई इलेक्ट्रोल का
इक लीटर नीर में खूब हिलाया।
जब गटका सारा एक ही बार में
तब जाकर थोड़ा मैं राहत पाया।

मैं साँच संभावना भविष्य की
जब डॉक्टर को मिलने आया।
दिया सुझाव रूटीन टेस्ट का
तब मैंने जाकर तुरंत कराया।

जब देखा रिपोर्ट ई.सी.जी. का
हुआ डॉक्टर मन विचलित भाया।
थोड़ा सोचा इधर-उधर की फिर
आकस्मिक भर्ती का फरमान सुनाया।

कार्यालय कि सरकारी गाड़ी ने
मुझे दिल्ली हार्ट तुरंत पहुँचाया।
बन अभिभावक नारायण जी ने
भर्ती प्रक्रिया को पूर्ण कराया।

आकस्मिक में भाई खुद को
मैं सौ प्रश्नों से घिरा पाया।
कर प्राथमिक जाँच मुझे फिर
आई.सी.यू. में फिर पहुँचाया।

आई.सी.यू. में डॉक्टर जी ने
इक बड़ा सा टी.वी. दिखलाया,
चलचित्र जहाँ सबके जीवन का
भी सूट हो रहा था मेरे भाया।

आई.सी.यू. में मैंने खुद को
सबसे युवावस्था बुजुर्ग पाया।
देखकर सबकी तकलीफें मन
मेरा ये कुछ थोड़ा हलकाया।

जैसे पहुँचा मैं बेड पर भाई
परिचायिकाओं से घिरा पाया।
इक ने बांधा मेरे हाथ में रस्सा
इक ने तो बल्लम जोर घुसाया।

सीने उदर में लगा के चिप्पक
बल्लम बोतल में और फंसाया।
अब चश्मा वाली परिचायिका ने
फिर दिनचर्या को मुझे सुझाया।

बात करूँ परिचायिका, नर्सिंग स्टाफ की
भाई मैंने तो सर्वगुण संपन्न उन्हें पाया।
देखकर उन सबकी सेवा, तत्परता और धैर्य
माता पुत्री और बहना उनमें नजर आया।

पड़े-पड़े आई.सी.यू. में मुझको
फिर यम का द्वार नजर आया।
एक तरफ जब देखा यम को तो
फिर दूजे यह संसार नजर आया।

इससे उबरा तब मैं जाकर
जब जाँच रिपोर्ट नार्मल आया
धन्यवाद करूँ मैं डॉक्टर सह सबका
जो यम द्वार से मुझे लौटाया।

ये सब बातें तो मेरी थी
परिवार हुआ विचलित भाया।
धन्यवाद करूँ मैं ईश्वर का
लौट सलामत घर को आया।



आनन्द मठपाल,
लिपिक

एक मन का अंतर्द्वंद्व
मैं कौन हूँ?

सेवानिवृत्ति के बाद,
न कोई नौकरी,
न कोई दिनचर्या,
और एक शांत घर, जो अब सिर्फ सन्नाटे की गूंज है...
मैंने अंततः अपने असली अस्तित्व को खोजना शुरू किया।

मैं कौन हूँ?
मैंने बंगले बनवाए,
छोटे-बड़े कई निवेश किए,
पर आज,
चार दीवारों में सिमट गया हूँ।

साइकिल से मोपेड,
मोपेड से बाइक,
बाइक से कार तक की रफ्तार और स्टाइल का पीछा किया –
पर अब, धीरे-धीरे चलता हूँ,
वो भी अकेले, अपने कमरे के भीतर।

प्रकृति मुस्कराई और पूछा,
"तुम कौन हो, प्रिय मित्र?"
मैंने कहा,
"मैं... बस मैं हूँ।"

राज्य देखे, देश देखे, महाद्वीपों की सैर की,
पर आज,
मेरी यात्रा
ड्राइंग रूम से रसोईघर तक सीमित है।

संस्कृतियाँ और परंपराएँ सीखी,
पर अब,
केवल अपने ही परिवार को समझने की इच्छा है।

प्रकृति फिर मुस्कराई,
"तुम कौन हो, प्रिय मित्र?"
मैंने उत्तर दिया,
"मैं... बस मैं हूँ।"

कभी जन्मदिन, सगाई, शादियाँ धूमधाम से मनाईं –
पर आज,
सब्ज़ियाँ खरीदने के लिए
सिक्के गिनता हूँ।

प्रकृति ने फिर पूछा,
"तुम कौन हो, प्रिय मित्र?"
मैंने कहा,
"मैं... बस मैं हूँ।"

सोना, चाँदी, हीरे –
लॉकर्स में चुपचाप पड़े हैं।

सूट-ब्लेज़र –
अलमारी में टंगे हैं, बिना छुए।

पर अब,
मैं नरम सूती कपड़ों में जीता हूँ,
सादा और आज़ाद।

कभी अंग्रेज़ी, फ्रेंच, हिंदी में दक्ष था –
अब,
माँ की बोली में
सुकून मिलता है।

काम के सिलसिलों में देश-देश घूमता रहा,
अब,
उन मुनाफ़ों और नुकसानों को
सिर्फ यादों में तौलता हूँ।

व्यवसाय चलाया,
परिवार बसाया,
अनेक रिश्ते बनाए,

पर अब,
मेरे सबसे प्रिय साथी
पड़ोस के वो स्नेही बुज़ुर्ग हैं।

कभी नियमों का पालन किया,
शिक्षा में आगे बढ़ा –
पर अब,
समझ आया कि वास्तव में मायने क्या रखता है।

ज़िंदगी की हर ऊँच-नीच के बाद,
एक शांत पल में,
मेरी आत्मा ने मुझसे फुसफुसा कर कहा:

बस अब...
तैयार हो जा,
हे यात्री...
अंतिम यात्रा की तैयारी कर।

प्रकृति ने कोमलता से मुस्कराते हुए पूछा,

"तुम कौन हो, प्रिय मित्र?"
और मैंने उत्तर दिया:

"हे प्रकृति,
तुम मैं हो...
और मैं तुम।
कभी मैं आकाश में उड़ता था,
अब ज़मीन को सम्मान से छूता हूँ।
मुझे क्षमा करो...
एक और मौका दो जीने का –
पैसा कमाने की मशीन नहीं,
एक सच्चा इंसान बनकर –
मूल्यों के साथ,
परिवार के साथ,
प्यार के साथ।"



अभिषेक मीना,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सरकारी नौकरी का सपना

जब घर में बैठा खाली-सा था,
एक नौकरी का सपना पाला था।
हर परीक्षा, हर इंटरव्यू की रात,
बस यही सोचा- "कब बनेगी बात?"

फिर एक दिन आया वो ख़त,
सरकारी नौकरी का सपना सत्यवत्।
माँ की आँखों में आशीर्वाद था,
पिता के माथे पे संतोष का भाव था।

पर अब जो निकला हूँ घर से दूर,
समझ आया - जीवन में हैं चिंताएं भरपूर।
बड़ा शहर है - भीड़ का मेला,
हर चेहरा अजनबी, हर रास्ता अलबेला।

किराए का कमरा, एक पंखा पुराना,
और थाली में कभी दाल, तो कभी बहाना।
यहाँ ना माँ के हाथ का खाना,
ना पापा की डांट, ना बहन का ताना।

भूल गया हूँ अब आराम से सोना,
सुबह से ही दफ़्तर की चिंता, रात को भी वही रोना-धोना।
कमरा छोटा, किराया भारी,
ना पास कोई अपना, ना कहने वाला "क्या हाल है भाई?"

ऑफिस का काम, नए नियम, नई भाषा,
ऊपर से घरवालों की उम्मीदों की आशा।
बिजली का बिल भरना, सिलेंडर की बुकिंग करना,
और जीवन की बढ़ती जिम्मेदारियों का बोझ उठाना।

कभी सोचा था जो नौकरी एक वरदान होगी,
अब लगता है जैसे ये भी एक परीक्षा होगी।
ज़िम्मेदारियाँ हैं - मां-बाप, समाज, और खुद की,
संतुलन बनाना ही सबसे बड़ी चुनौती जीवन की।

फिर भी हर रात जब थका सा लेटता हूँ,
तो माँ की आवाज़ कानों में बहती है -
"हिम्मत मत हार बेटा, ये वक्त भी कटेगा,"
और मैं फिर मुस्कुरा कर तकिये से कहता हूँ -
"मैं मजबूत हूँ... सरकारी हूँ.... अकेला नहीं हूँ।"



हेमराज मीना,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बायोमेट्रिक का युग - संघर्ष और उम्मीद

सुबह की पहली किरण के साथ, अलार्म से जागते थे,
लेकिन अब जागते है, मशीन की हाजिरी की चिंता से।
बस मशीन बोले - "लॉगिन सक्सेसफुल", तभी मानों आना हुआ साकार,
क्योंकि इससे ही तय होता है, कब तुम आए, कब तुम निकले बाहर।

पर ज़िंदगी है कठिन, महानगरों की सड़कों के हाल बेहाल है,
ट्रैफिक जाम में फंसे हर दिन, गरमी से पसीने में लथ-पथ हो जाते हैं,
बारिश की बूँदें गिरे तो सड़कों पर पानी के समंदर बन जाते है,
हर मौसम की मार झेल कर भी, दौड़ते, थकते कार्यालय पहुँचते हैं।

बसों की भीड़, मेट्रो की धक्का-मुक्की में झुंझलाहट भी आती है,
क्योंकि दस मिनट की देरी हुई तो, पूरे दिन की छुट्टी कट जाती है।
सुबह नौ बजे और शाम साढ़े पांच बजे का होता है एक जैसा नजारा,
सबका एक साथ कार्यालय मे दाखिल होना और एक साथ निकलना।

कर्मचारी कहता है - "ये कैद है हमारी",
सरकार कहती है - "ये तो ज़रूरत है जमाने की"
भ्रष्टाचार और मनमानी से छुटकारा पाने की,
नियमों की सख्ती से ही व्यवस्था सुधर पाएगी।

लेकिन इन सब के बीच, सच भी है छुपा नहीं,
बहाने कम हुए, अनुशासन बढ़ा, कामकाज हुआ सही।
सारे बकाया कार्य हुए क्लियर, भ्रष्टाचार पर लगा ब्रेक,
परिश्रम की कद्र बढ़ी, कर्मचारियों में जागा नए दौर का हौसला।

दूर से आने वाले, बहाने बनाते थे कभी,
"ट्रेन लेट थी", "बस चली गई", या कभी "मौसम की खराबी",
सुबह जल्दी निकलने लगे हैं अब, जो दूर से आते है,
बायोमेट्रिक की सख्ती ने उन्हें अनुशासित बनाया है।

सरकार खुश-कम हुई सरकारी कर्मचारियों की मनमानी,
कामकाज में बढ़ी पारदर्शिता और ईमानदारी।
ये बायोमेट्रिक सिस्टम है, एक दोधारी तलवार,
जिसके एक तरफ सुविधा, तो दूसरी तरफ डेटा का व्यापार।

गोपनीयता की चिंता हर दिल में छुपी है,
आधार की चाबियाँ खो ना जाएं, कहीं डेटा लीक हो ना जाएं,
कैसे बचाएंगे हम निजता से जुड़ी जानकारियाँ?
जीते है इस डर में की, खो ना जाए कर्मचारी की आज़ादी।

बारिश, जाम, भीड़ जैसी चुनौतियों को देखते हुए,
थोड़ा मानवता का रंग इसमें मिलाना होगा ज़रूरी।
कर्मचारी की पीड़ा को समझें, तकनीक को और निखारें,
जहाँ कर्मचारी भी खुश रहे, और काम भी बढ़ जाएं।

यह युग है बदलाव का, नई तकनीक का,
जिसमें छुपी है चुनौतियाँ, और छुपा है अवसर का प्रकाश।
माना कि कठिन है ये सफर, पर चलना होगा साथ-साथ,
तभी बनेगा हमारे सपनों का विकसित और आत्मनिर्भर भारत।



भूपेन्द्र राणा,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पे कमीशन का इंतजार

10 साल तक जो देखा सपना,
हर दिन काटा हर पल जपना।
तनख्वाह वही महँगाई भारी,
उम्मीदों की थी चलती सवारी।

सवेरे उठता, ऑफिस जाता हो जाता फाइलों में गुम,
बिना किसी की शिकायत के बिना किसी शोर-शर्म।
आँखों में है बस एक ही दीदार,
कब आएगा अगला वेतन सुधार।

कभी बच्चों की फीस टाली,
कभी घर की छत पुरानी डाली।
बीवी के गहने गिरवी रखे,
पर ईमानदारी से कभी कदम न हटें।

और फिर एक दिन वो खुशखबरी आई,
सुनकर दिल की धड़कन मुस्काई।
"पे कमीशन आ गया" बोल साथी,
चेहरे पर आई खुशी ऐसी जैसे हम हो बाराती।

अब ना सिर्फ खर्चा सोचूंगा,
हर महीने कुछ जोड़ के रखूंगा।
बैंक पासबुक में भी मुस्कान आएगी,
भविष्य में कुछ सुधार की नींव रखी जाएगी।

पहले जो सोचा था, अब करके दिखाउँगा,
म्युचुअल फंड और पीपीएफ में निवेश करूंगा।
बीमा भी लूंगा पूरी समझदारी से,
अब न जीऊंगा मैं मजबूरी से।

बच्चों की शिक्षा अब सुधरेगी,
बेटी की शादी भी अब भव्य बनेगी।
घर की मरम्मत भी अब हो पाएगी,
बीवी की मुस्कान फिर लौट आएगी।

हर महीने एक हिस्सा बच्चों के नाम,
ताकि उनके सपनों की मिल सके पूरा दाम।
थोड़ा सा माता-पिता के लिए भी बचाऊंगा,
आपातकाल में अब न किसी को सताऊँगा।

ये कविता उस कर्मयोगी की कहानी है,
जो इंतज़ार में भी उम्मीद तराशता है।
वो न थका न रुका और न कभी झुका,

समर्पित उन सभी सरकारी कर्मियों की,
जिनके धैर्य और सेवा का फल
देर से सही पर मिलता जरूर है।



मानवेन्द्र झा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

गाँव एक पारितंत्र

भारत का हरेक गाँव
शहरों से कहीं बेहतर
और खुद में स्वतंत्र है,
वह उपभोक्ता के साथ
अच्छा उत्पादक भी है
और बेहतर पारितंत्र है।
हां वही पारितंत्र जो
हर स्वतंत्र जीवन की
सामुहिक इकाई है,
जहाँ पेड़-पौधे, जन्तु
व मानव-मवेशियों की
आपसी मिताई है।
भारत का हरेक गाँव
अपने-आप में सुदृढ़ है
पश्चिमी देशों से बेहतर है
यहां ट्रेड की बंदी का
व्यापार प्रतिद्वंद्वी का
कभी न होता असर है।
लॉकअप हो या लॉकडाउन
गाँव एक आत्मनिर्भर देश है,
शहरों की भांति पराश्रित नहीं
जो आश्रितों का उपनिवेश है।
नाकेबंदी में ये शहर वाले
भूखे प्यासे बिलबिलाएंगे,
किंतु गांव वाले खुद जियेंगे
और आश्रितों को भी जिलाएंगे।



अनिल कुमार,
कल्याण सहायक

मैं सड़क हूँ

मैं पथ हूँ, मैं गति हूँ, मैं जीवन की डगर,
हर मुसाफ़िर का साथी, हर मंजिल का सफ़र।
कभी धूल, कभी डामर, कभी ईंट-पत्थर का रंग,
मैं सड़क हूँ, जो जोड़ती है जीवन का हर अंग।

मैं सड़क हूँ। लोग मुझे रोज देखते हैं, रोज़ मेरे ऊपर चलते हैं, गाड़ियाँ दौड़ाते हैं, ठोकर खाते हैं, खुशियाँ मनाते हैं और दुख भी सहते हैं पर कभी किसी ने यह सोचा है कि मैं भी बोल सकती हूँ? मेरे भी अनुभव हैं, मेरे भी घाव हैं और मेरी भी हँसी है। मैं पत्थर, डामर और कंक्रीट की बेजान सतह मात्र नहीं, बल्कि सभ्यता की धड़कन हूँ।

मनुष्य जब जंगलों से निकलकर सभ्यता की ओर बढ़ा, तो मेरा जन्म हुआ। शुरुआत में मैं टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी थी। आदिमानव शिकार के लिए, जल लेने के लिए या अपने झुंड से मिलने के लिए मेरी ही गोद में चलता था। धीरे-धीरे गाँव बने, नगर बने, तो मैं भी बदलती गई। कभी मिट्टी की पगडंडी, कभी कच्चा रास्ता, और फिर ईंट-पत्थरों से बनी गली। सिंधु घाटी सभ्यता की गली-कूचों में मैं थी जहाँ सफाई और जल-निकासी का अद्भुत प्रबंध हुआ करता था। मौर्यकाल में मैं राजमार्ग बनी, अशोक के साम्राज्य को जोड़ने वाली जीवन रेखा। ग्रांड ट्रंक रोड मेरे ही प्राचीन रूप की अमर पहचान है। उस समय व्यापारी मेरे सहारे दूर देशों तक सामान ले जाते और संस्कृति का आदान-प्रदान करते थे। कहा जाए तो इतिहास का हर अध्याय मेरी पीठ पर लिखा गया है।

आज मैं बदले रूप में हूँ। चौड़ी, चिकनी, सीमेंट और डामर से बनी हुई हूँ। कभी फ्लाईओवर बन जाती हूँ, कभी एक्सप्रेसवे। रात-दिन मेरे ऊपर ट्रक, बसें, मोटरगाड़ियाँ, टैक्सी और साइकिलें दौड़ती हैं। मैं केवल गाँव-शहर जोड़ने का साधन नहीं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था की धुरी बन चुकी हूँ। उद्योग-व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य सब मेरे बिना अधूरे हैं।

"मैं नहीं केवल पत्थर और गिट्टी का मेल,
मैं तो हूँ विकास की डगर, प्रगति का खेल।"

पर सोचिए, क्या मेरे जीवन में केवल गंभीरता ही है? नहीं, मेरे हिस्से में हँसी भी है। जब कोई बच्चा पहली बार साइकिल चलाना सीखते-सीखते धड़ाम से मेरी छाती पर गिर जाता है, तो मैं भी हँस देती हूँ। जब प्रेमी युगल हाथ पकड़कर कहते हैं यह रास्ता हमारा गवाह बनेगा तो मुझे बड़ी गुदगुदी होती है। जब ट्रैफिक जाम में लोग लगातार हॉर्न बजाते हैं, तो मुझे लगता है जैसे कोई मुफ्त का बैंड-बाजा बारात मेरे ऊपर ही सज गई हो। मेरे जीवन में ये छोटी-छोटी बातें हँसी के रंग भर देती हैं। लेकिन मेरे हिस्से का दुःख भी गहरा है। सबसे बड़ा दर्द है हादसों का। रोज़ किसी न किसी की जान मेरे ऊपर चली जाती है। खून के धब्बे मेरी छाती पर रह जाते हैं और मैं चुपचाप सह लेती हूँ। बरसात आते ही मेरे शरीर पर गड्ढे पड़ जाते हैं। लोग मुझे गालियाँ देते हैं पर दोष असल में लापरवाहियों और भ्रष्टाचार का होता है। त्योहारों के बाद छोड़ी गई गंदगी, कचरे के ढेर, थूक और पोस्टर मेरी हालत खराब कर देते हैं। जिन लोगों के लिए मैं सेवा करती हूँ, वही लोग मुझे तकलीफ देते हैं यही मेरा सबसे बड़ा दुख है।

"खाकर पान-गुटखा मुझको करते लालम लाल,
होती अत्यंत दुखी इससे होते मेरे हाल बेहाल।"

कभी-कभी मुझे व्यंग्य करने का मन करता है। लोग कहते हैं "हम रास्ता भटक गए।" मैं मन ही मन सोचती हूँ" गलती तुम्हारी है, मैं तो सीधी-सीधी खड़ी हूँ।" लोग कहते हैं "सफलता की राह आसान नहीं।" तब लगता है कि कहना चाहिए "अरे भाई, अगर मुझे ठीक से बनाओ तो मैं बहुत आसान हूँ।" और जब नेता चुनाव के समय बड़ी-बड़ी बातें करते हैं कि मुझे चौड़ा और सुंदर बनाएंगे लेकिन बाद में मुझे गड्ढों से भरा छोड़ देते हैं, तो मेरी हालत देखकर मैं खुद ही व्यंग्य में हँस पड़ती हूँ।

मेरा जीवन और इंसान का जीवन बहुत मिलता-जुलता है। जैसे इंसान जन्म लेता है, बढ़ता है, गिरता है और फिर संभलता है वैसे ही मैं भी बार-बार टूटती और बनती हूँ। इंसान चाहे कितना भी ऊँचा क्यों न उड़ जाए, उसे मंजिल तक पहुँचने के लिए मेरे ऊपर से होकर ही जाना पड़ता है। मैं उसे सिखाती हूँ कि यात्रा जारी रखो, रुकना मत।

मेरे पास इंसान के लिए कुछ सीखें भी हैं।

1. **धैर्य और सहनशीलता -** मैं लाखों का बोझ उठाती हूँ, फिर भी चुपचाप सेवा करती रहती हूँ। इंसानों में सेवा-भाव से समाज को कभी कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा सभी का जीवन सरल हो जायेगा।

2. **सेवा भाव -** मैं अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, धर्म-जाति सबको बराबर रास्ता देती हूँ। मैं बिना किसी भेद-भाव सेवा भाव से समाज को नई गति की प्राप्ति होगी।

3. **निरंतरता -** मेरी यात्रा कभी थमती नहीं। टूटने पर भी मुझे फिर बनाया जाता है। इंसान को भी जीवन में लगातार आगे बढ़ते रहना चाहिए।

4. **स्वच्छता और अनुशासन -** गंदगी से मैं बिगड़ जाती हूँ, वैसे ही गंदगी और अव्यवस्था से समाज भी बिगड़ता है।

"कभी हँसती हूँ, कभी रोती हूँ, कभी टूटती हूँ, कभी सँवरती हूँ।
मेरी सबसे बड़ी खुशी यही मैं सबको मंजिल तक पहुँचाती हूँ।"

इंसान चाहे कितना भी आधुनिक क्यों न हो जाए, उसकी यात्रा मुझ पर टिकेगी ही। इसलिए याद रखो मैं केवल रास्ता नहीं, बल्कि जीवन की सच्चाई और समाज की धड़कन हूँ। इसलिए, यदि इंसान मेरी तरह बने सबको बराबर समझे, दूसरों की मदद करे और कठिनाइयों के बावजूद निरंतर आगे बढ़े तो उसका जीवन भी आसान होगा और समाज भी खुशहाल ।

मैं ही हूँ उद्योग, शिक्षा और व्यापार की रीढ़,
मेरे सहारे ही देश पाएगा नई गति, नई भीड़।

सबसे बड़ा अत्याचार तो तब होता है जब भ्रष्टाचार मेरी आत्मा को खोखला कर देता है। ठेकेदार घटिया सामग्री से मुझे बनाते हैं, नेता केवल चुनावी मौसम में मेरी सुध लेते हैं और फिर मुझे गड्ढों से भरा छोड़ देते हैं। लोग हादसों में अपनों को खो देते हैं, लेकिन अपनी लापरवाही और नियम तोड़ने की आदत पर कभी अंकुश नहीं लगाते। फिर गालियों मुझे दी जाती हैं, जबकि दोष उनके कर्मों का होता है।

शिक्षाः- यह कहानी हमें जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में धैर्य सेवा और समानता का भाव बनाए रखने के साथ- साथ निरंतरता, सहनशीलता एवं ईमानदारी का प्रतीक बनकर जीवन की सच्चाई बताती है।



अमित कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मध्यमवर्गीय लोगों के बड़े सपने

कहते हैं कि सपने देखने पर कोई टैक्स नहीं लगता। शायद इसी कारण सबसे ज़्यादा सपने मध्यवर्गीय नौकरीपेशा आदमी ही देखता है। वह सुबह उठते ही करोड़ पति बनने का सपना देखता है, ऑफिस जाते समय प्रमोशन का सपना देखता है, दोपहर में बॉस की कुर्सी पर बैठने का सपना देखता है और शाम को घर लौटते-लौटते इस निष्कर्ष पर पहुँच जाता है कि फिलहाल महीने की पाँच तारीख तक वेतन बच जाए, यही बहुत बड़ी उपलब्धि है।

मध्यवर्गीय कर्मचारी की जिंदगी किसी सरकारी फाइल की तरह होती है–चलती तो है लेकिन इतनी धीरे कि देखने वाले को लगता है, शायद रुकी हुई है।

सुबह अलार्म नहीं बजता, बल्कि जिम्मेदारियाँ बजती हैं। आँख खुलते ही सबसे पहले मोबाइल में बैंक बैलेंस देखने की आदत पड़ जाती है। ऐसा नहीं कि रातों-रात करोड़ों रुपये आ जाने की उम्मीद होती है पर मनुष्य आशातीत का जीव है। कहीं कोई बैंक वाला गलती से किसी उद्योगपति की रकम उसके खाते में डाल दे, तो क्या बुरा है? मगर बैंक वाले भी जाने क्यों गलती हमेशा गरीब के खिलाफ ही करते हैं।

घर से निकलते समय पत्नी की एक ही सलाह होती है–"देखिए इस बार प्रमोशन के लिए थोड़ा प्रयास कीजिए। शर्मा जी तो आपसे बाद में आए थे, आज कार बदल रहे हैं।"

यह वाक्य सुनते ही आदमी के भीतर का स्वाभिमान अंगड़ाई लेता है। वह मन ही मन संकल्प करता है कि आज ऑफिस में ऐसा काम करेगा कि बॉस खुद कहेंगे–"तुम्हारे बिना यह विभाग अधूरा है।"

लेकिन ऑफिस पहुँचते ही बॉस कहते हैं–"तुम्हारे बिना भी विभाग चल रहा था, अब यह अतिरिक्त काम भी संभाल लो।"

यही वह क्षण होता है जब महत्वाकांक्षा पहली बार चाय पीने चली जाती है।

ऑफिस का सबसे मेहनती कर्मचारी वही होता है जिसे सबसे अधिक काम मिलता है। और सबसे चतुर कर्मचारी वही होता है जिसे सबसे कम काम मिलता है। मेहनती व्यक्ति फाइलों में दबा रहता है जबकि चतुर व्यक्ति बॉस के आसपास मंडराता रहता है। शाम को पुरस्कार भी उसी को मिलता है, जिसने पूरे दिन "सर... बिल्कुल सर..." का उच्चारण सबसे अधिक बार किया हो।

मध्यवर्गीय कर्मचारी हर साल नए लक्ष्य बनाता है। इस वर्ष अंग्रेज़ी सुधारूँगा। व्यक्तित्व विकास का कोर्स करूँगा। शेयर बाज़ार सीखूँगा। सुबह पाँच बजे उठूँगा। योग करूँगा। एक साइड बिजनेस भी शुरू करूँगा।

जनवरी के पहले सप्ताह तक सब ठीक चलता है। दूसरे सप्ताह में योगा मैट अलमारी में चला जाता है। तीसरे सप्ताह तक अंग्रेज़ी की किताब मेज़ का संतुलन बनाने लगती है और चौथे सप्ताह तक शेयर बाज़ार का ज्ञान इस निष्कर्ष पर पहुँच जाता है कि "बाज़ार में वही कमाता है जिसके पास पहले से पैसा हो।"

फिर वह अगले साल का इंतज़ार करने लगता है।

उसके जीवन में प्रेरणादायक वीडियो भी खूब आते हैं। कोई कहता है–"सफल लोग केवल चार घंटे सोते हैं।" वह उत्साहित होकर नींद कम कर देता है। अगले दिन ऑफिस में चार घंटे सो जाता है। दूसरा गुरु कहता है–"रिस्क लो, तभी आगे बढ़ोगे।"

वह बड़ी हिम्मत करके बॉस से वेतन बढ़ाने की बात कर देता है। बॉस मुस्कुराकर कहते हैं–"बहुत अच्छा... तुम्हारे अंदर नेतृत्व क्षमता आ रही है। वैसे अगले महीने से बजट कट रहा है।" उस दिन से वह फिर केवल प्रेरणादायक वीडियो ही देखता है, प्रेरणा लेना बंद कर देता है।

मध्यवर्गीय कर्मचारी की सबसे बड़ी समस्या यह है कि उसकी इच्छाएँ अमीरों जैसी होती हैं और जेब सरकारी नोट शीट जैसी–हर समय स्वीकृति का इंतजार करती हुई।

उसे भी बड़ी कार चाहिए, विदेश घूमना है, बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ाना है, माता-पिता की सेवा करनी है, घर का लोन चुकाना है, भविष्य के लिए बचत करनी है और वर्तमान में थोड़ा जीना भी है।

लेकिन वेतन आते ही सबसे पहले ईएमआई सलामी देती है। उसके बाद बिजली, पानी, गैस, इंटरनेट, स्कूल फीस, बीमा और किराने वाले का चेहरा सामने आ जाता है। अंत में जो कुछ बचता है, वह इतना कम होता है कि आदमी उसे देखकर कहता है–"इसे बचत कहूँ या इसकी श्रद्धांजलि सभा कर दूँ?"

ऑफिस में उसका एक मित्र जरूर होता है जो हर तीसरे महीने कहता है–"भाई, मैं नौकरी छोड़ रहा हूँ। अपना स्टार्टअप शुरू करूँगा।"

वह भी दो मिनट के लिए रोमांचित हो जाता है। फिर याद आता है कि स्टार्टअप शुरू करने के लिए पहले स्टार्ट करने लायक पूँजी चाहिए। इसलिए वह चुपचाप अगली फाइल खोल लेता है।

प्रमोशन की सूची आने का दिन तो किसी चुनाव परिणाम से कम नहीं होता। पूरे ऑफिस में ऐसी बेचैनी रहती है जैसे हर व्यक्ति मुख्यमंत्री बनने वाला हो। सूची लगती है, नाम किसी और का निकलता है।

वह मुस्कुराकर कहता है–"कोई बात नहीं, मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती।"

फिर वॉशरूम में जाकर आईने से पूछता है–"भाई, आखिर कमी कहाँ रह गई?"

आईना भी सरकारी कर्मचारी होता है। कुछ नहीं बोलता।

मध्यवर्गीय कर्मचारी की सबसे बड़ी प्रतिभा समझौता करना है। वह सपनों से समझौता करता है, परिस्थितियों से समझौता करता है, महँगाई से समझौता करता है और अंत में अपने आप से भी समझौता कर लेता है। फिर भी अगले सोमवार को समय पर ऑफिस पहुँच जाता है। यही उसकी सबसे बड़ी बहादुरी है।

समाज भी उससे बड़ी उम्मीदें रखता है। रिश्तेदार पूछते हैं–"अरे, अभी तक अपना मकान नहीं लिया?"

उसे कौन समझाए कि मकान लेना अब सपना नहीं, शोध का विषय बन चुका है।

बैंक वाले कहते हैं–"सर, आपको आसानी से पचास लाख का लोन मिल जाएगा।"वह मन ही मन सोचता है–"मिल तो जाएगा, लेकिन उसे चुकाने के लिए शायद अगला जन्म लेना पड़े।"

फिर भी वह आवेदन पत्र भर देता है। आशा पर दुनिया कायम है।

मध्यवर्गीय कर्मचारी का मन बड़ा विचित्र होता है। वह लॉटरी का टिकट भी खरीदता है और वित्तीय अनुशासन पर किताब भी पढ़ता है। वह भगवान से प्रार्थना भी करता है और एक्सेल शीट में बजट भी बनाता है। उसे पता है कि दोनों में से किसी एक का चमत्कार ही उसे महीने के अंत तक सम्मानपूर्वक पहुँचा सकता है।

सबसे रोचक दृश्य तब होता है जब कोई मोटिवेशनल स्पीकर मंच से कहता है–"अगर आपके सपने बड़े हैं, तो कोई आपको रोक नहीं सकता।"

मध्यवर्गीय कर्मचारी धीरे से बुदबुदाता है–"साहब, आपको शायद ईएमआई, स्कूल फीस और महँगाई से अभी परिचय नहीं हुआ है।" लेकिन वह निराशावादी नहीं होता।

अगले दिन फिर समय पर उठता है।
फिर इस्त्री की हुई शर्ट पहनता है।
फिर बस, मेट्रो या स्कूटर से ऑफिस जाता है।
फिर पूरी ईमानदारी से काम करता है।
फिर शाम को लौटते समय सब्ज़ी भी ले आता है।
यही उसकी सफलता है, जिसे दुनिया अक्सर असफलता समझ लेती है।

वास्तव में मध्यवर्गीय कर्मचारी हारता नहीं, बस हर महीने नई शुरुआत करता है। उसका संघर्ष किसी अखबार की सुर्खी नहीं बनता क्योंकि वह बिना शोर किए जीवन की सबसे कठिन परीक्षा देता रहता है।

उसके सपने टूटते भी हैं और फिर जुड़ भी जाते हैं। वह करोड़पति नहीं बन पाता लेकिन अपने बच्चों की पढ़ाई नहीं रुकने देता। वह महलों का मालिक नहीं बनता लेकिन अपने छोटे से घर को हँसी से भरने की कोशिश करता है। उसे हर बार प्रमोशन नहीं मिलता, फिर भी वह अपने काम से विश्वासघात नहीं करता।

यही इस देश के करोड़ों मध्यवर्गीय कर्मचारियों की असली विडंबना भी है और असली ताकत भी। उनकी जिंदगी का व्यंग्य यह नहीं कि वे बड़े सपने देखते हैं। व्यंग्य तो यह है कि समाज उनके सपनों पर हँसता है लेकिन उसी समाज की पूरी व्यवस्था उन्हीं के कंधों पर चलती है।

वे न इतने गरीब हैं कि योजनाओं के पात्र बन सकें, न इतने अमीर कि चिंताओं से मुक्त हो जाएँ। वे बस बीच में खड़े हैं—जहाँ जिम्मेदारियाँ ऊपर से गिरती हैं और सुविधाएँ नीचे से खिसक जाती हैं।

फिर भी वे मुस्कुराते हैं। तनख्वाह आने पर मिठाई भी ले आते हैं। बच्चों की छोटी-सी सफलता पर ऐसे खुश होते हैं जैसे स्वयं विश्वविजेता बन गए हों। पत्नी के साथ महीने के अंत में चाय पीते हुए अगले महीने का बजट बनाते हैं और उसी बजट में एक नया सपना भी जोड़ देते हैं।

शायद इसी का नाम मध्यवर्ग है—जहाँ सपनों की ऊँचाई आसमान छूती है, जेब की गहराई ज़मीन पर रहती है, और दोनों के बीच संतुलन बनाते-बनाते आदमी हँसना सीख जाता है।

और सच पूछिए तो इस देश का सबसे बड़ा हास्य कलाकार कोई मंच पर खड़ा कॉमेडियन नहीं, बल्कि वही मध्यवर्गीय ऑफिस कर्मचारी है, जो हर महीने अपनी सैलरी देखकर भी अगले महीने के सपने देखने की हिम्मत रखता है।



सत्यम गुप्ता,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

स्मार्टफोन स्क्रीन में खोता बचपन
तकनीक के दौर में नई पीढ़ी और नई चुनौतियाँ

एक ऐसा समय भी था जब बच्चे मिट्टी में खेलते, पेड़ों पर चढ़कर कल्पनाएँ बुनते और परिवार की बातचीत में अपनी दुनिया खोजते थे। आज वही बचपन मोबाइल स्क्रीन की चमक में सिमटकर रह गया है। कई घरों में बच्चे पहली बार जिस "चेहरे" से परिचित होते हैं, वह उनके माता-पिता का नहीं, बल्कि मोबाइल का होता है। यह बदलाव केवल तकनीकी विकास नहीं– बचपन के स्वाभाविक विकास में गहरी अवरोध भी है।

स्क्रीन का बढ़ता प्रभाव : सुविधा से लत तक

माता-पिता अक्सर अत्यधिक व्यस्त दिनचर्या के बीच बच्चे को शांत रखने के लिए फोन पकड़ा देते हैं। शुरुआत में यह एक समाधान प्रतीत होता है–बच्चा शांत, माता-पिता को राहत। पर धीरे-धीरे यह सुविधा स्क्रीन-निर्भरता में बदल जाती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, 2 से 4 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रतिदिन अधिकतम स्क्रीन-टाइम केवल 1 घंटा होना चाहिए। लेकिन एम्स रायपुर के एक विश्लेषण के मुताबिक भारत में 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों का औसत दैनिक स्क्रीन-टाइम 2.2 घंटे है। और सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि 2 वर्ष से कम उम्र के बच्चों का औसत स्क्रीन-टाइम 1.2 घंटे प्रतिदिन पाया गया, जबकि इस आयु वर्ग के लिए अनुशंसित स्क्रीन-टाइम शून्य होना चाहिए।

दिमाग़ पर प्रभाव : तेज़ दृश्य और मस्तिष्क की रसायन-क्रिया

आज के अधिकांश डिजिटल कंटेंट को इस प्रकार डिज़ाइन किया जाता है कि वह बच्चों के मस्तिष्क में लगातार डोपामिन रिलीज करे। तेज़ रंग, बढ़ी हुई आवाज़ें और हर 2-3 सेकंड में बदलते दृश्य बच्चों के दिमाग को "डोपामिन हाइपर-लोड" की आदत डाल देते हैं। कोकोमेलन जैसे वीडियो इसी उद्देश्य से वैज्ञानिक ढंग से डिज़ाइन किए जाते हैं। परिणामस्वरूप–

- वास्तविक दुनिया उन्हें धीमी और उबाऊ लगने लगती है,
- ध्यान क्षमता घटने लगती है,
- और बच्चा साधारण गतिविधियों में रुचि खो देता है।

शोध बताते हैं कि अत्यधिक स्क्रीन-उपयोग बच्चों के 'प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स' और 'पैरिएटल लोब' के विकास को बाधित करता है। यह वही क्षेत्र हैं जो संवेदना, निर्णय लेने, आत्म-नियंत्रण और सहानुभूति जैसे गुणों को विकसित करते हैं।

भाषा और व्यवहार : 'वर्चुअल ऑटिज़्म' की आशंका

भाषा सीखना एक संवादात्मक प्रक्रिया है–माता-पिता के चेहरे, भाव, होंठों की हरकत और प्रतिक्रिया से। स्क्रीन यह प्रक्रिया बाधित कर देती है। परिणामस्वरूप–

- भाषा विकास में देरी,
- सामाजिक कौशलों में कमी,
- अनुचित नकल,
- और 'वर्चुअल ऑटिज़्म' जैसे लक्षण सामने आते हैं।

दर्जनों परिवार बताते हैं कि 4-5 वर्ष के बच्चे अभी भी पूर्ण वाक्य बोलने में कठिनाई महसूस करते हैं, और कार्टून पात्रों की आवाज़ें दोहराते रहते हैं।

शरीर पर असर : नींद, मोटापा और आँखें खतरे में

आज हजारों परिवारों में स्थिति इतनी गम्भीर है कि 3-4 वर्ष के बच्चे बिना फोन के सामान्य भोजन भी नहीं कर पाते। कई बच्चों में भाषा विकास थम जाता है, सामाजिक कौशल कमजोर होते हैं और 'वर्चुअल ऑटिज़्म' जैसे लक्षण दिखाई देने लगते हैं। चिकित्सकों का कहना है कि अत्यधिक स्क्रीन-टाइम बच्चों की नींद, आँखों के स्वास्थ्य, ध्यान क्षमता, मोटर स्किल्स और भावनात्मक संतुलन–सब पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। निकट दृष्टि दोष (मायोपिया) इतनी तेज़ी से बढ़ रहा है कि 2050 तक भारत के आधे बच्चों को चश्मे की आवश्यकता पड़ सकती है।

परिवार में मौन दूरी : एक ही कमरे में अलग-अलग दुनिया

आज का परिवार अक्सर एक कमरे में रहते हुए भी मानसिक रूप से अलग-अलग स्क्रीन-विश्वों में खो जाता है–

- माता-पिता मोबाइल में,
- बड़ा बच्चा सोशल मीडिया में,
- छोटा बच्चा यूट्यूब पर।

यह भावनात्मक दूरी बढ़ाता है और बच्चों को परिवार से अधिक डिजिटल दुनिया के साथ जोड़ देता है। इसलिए सबसे महत्वपूर्ण समाधान है ***अभिभावकों का स्व-अनुशासन।***

समाधान : अभिभावकों के लिए व्यवहारिक और संवेदनशील कदम

बच्चों के लिए दिन में कुछ घंटे बाहरी गतिविधियों का होना अनिवार्य है–धूप, मिट्टी, खेल, दौड़, हँसी और दोस्तों के साथ संवाद, यह सब मानसिक और शारीरिक संतुलन का मूल आधार है। घर के भीतर बच्चों को संगीत, कहानियों, पेंटिंग, ब्लॉक्स, पज़ल्स, बोर्ड गेम्स और किताबों जैसे विकल्प दिए जाएँ। यह विकल्प केवल वस्तुएँ नहीं होते–ये रिश्ते बनाते हैं, यादें बनाते हैं, और बच्चे को वास्तविक दुनिया से जोड़ते हैं।

सबसे कठिन चरण होता है बच्चे को स्क्रीन से दूर करने का संक्रमण-काल। इस दौरान गुस्सा, रोना, चिड़चिड़ापन और विरोध होना स्वाभाविक है। परंतु अभिभावकों को धैर्य रखना होगा। दंड, डाँट या शर्मिंदा करना स्थिति को और बिगाड़ता है। इसके बजाय बच्चे को समझाएँ कि यह यात्रा हम दोनों की है–हम एक टीम हैं और स्क्रीन दूसरी तरफ है। इस साझेदारी का अहसास ही बच्चे को सुरक्षित महसूस कराता है।

भविष्य को बचाना वर्तमान की जिम्मेदारी

मोबाइल फोन आज की आवश्यकता हैं, लेकिन बच्चों के लिए अनियंत्रित स्क्रीन उपयोग भविष्य की सबसे खतरनाक चुनौतियों में से एक है। अभिभावकों, शिक्षकों और समाज–सबके लिए यह समय जागरूक होने का है। हम अपने बच्चों को तकनीक दें, पर तकनीक की गुलामी नहीं। हम उन्हें डिजिटल सुविधा दें, पर डिजिटल निर्भरता नहीं। बचपन केवल एक बार मिलता है–हमें उसे स्क्रीन की कृत्रिम चमक से बचाकर वास्तविक जीवन की रोशनी से भरना होगा।



राजन कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

वैश्विक पहचान की ओर बढ़ता लोक आस्था का महापर्व : छठ पूजा

भारतवर्ष हमेशा से विविध धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत से धनी रहा है। इसी क्रम में कुछ ऐसे पर्व एवं त्यौहार है जो धार्मिक दृष्टिकोण से बढ़कर जन जीवन की आत्मा के रूप में अपनी एक अलग पहचान रखते है। छठ पूजा ऐसा ही एक अनुपम महापर्व है, जो विशेष रूप से बिहार की माटी से उपजा है और आज संपूर्ण भारतवर्ष में इसे लोकआस्था के महापर्व के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है। इस पर्व में विशेष रूप से सूर्य देव और छठी मैया की उपासना की जाती है जिसमे मानवता और प्रकृति के बीच के अद्भुत सामंजस्य देखने को मिलता है।

भारत सरकार की एक सराहनीय पहल

भारत की सांस्कृतिक विरासत केवल एतिहासिक स्मारकों तक सीमित नही है, बल्कि यह जीवंत परम्पराओं, लोकास्थाओं और सामूहिक जीवन मूल्यों में भी बसा हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' के 126वें एपिसोड में छठ पूजा का उल्लेख करते हुए इसे भारतीय संस्कृति की आत्मा से जुड़ा पर्व बताया। उन्होंने कहा की छठ पूजा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, यह सामूहिक सहभागिता, पर्यावरणीय संतुलन और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का जीवंत उत्सव है।

यह वक्तव्य स्पष्ट करता है कि छठ पूजा का महत्व धार्मिक सीमाओं से कहीं आगे जाकर सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक मूल्यों को समेटे हुए है।

इसी क्रम में हाल ही में भारत सरकार की ओर से की छठ पूजा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए की गयी पहल बहुत ही सराहनीय है। भारत सरकार के द्वारा छठ पूजा को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल करने के लिए की पहल ने इस महापर्व को वैश्विक विमर्श के केंद्र में लाने का काम किया है।

छठ पूजा की विशेषता एवं मानवता के लिए सन्देश

छठ पूजा की विशिष्टता यह है कि इसमें डूबते और उगते दोनों सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया जाता है। यह जीवन के हर चरण में संतुलन, धैर्य और कृतज्ञता का प्रतीक है, ऐसा दर्शन जो आज के वैश्विक समाज के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

छठ महापर्व चार दिनों तक चलने वाले कठोर व्रत और नियमों का पर्व है।

- नहाय खाय: पहले दिन व्रती नदी या जलाशय में स्नान कर शुद्ध भोजन ग्रहण करते हैं।
- खरना: दूसरे दिन दिनभर का उपवास रखकर शाम को खीर और रोटी का भोग लगाया जाता है, जिसके बाद 36 घंटे का निर्जला उपवास प्रारंभ होता है।
- संध्या अर्घ्य: तीसरे दिन नदी तट पर अस्ताचलगामी अर्थात डूबते सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया जाता है।
- उषा अर्घ्य: चौथे दिन उगते सूर्य को अर्घ्य देकर व्रत पूर्ण होता है।

यह कठोर तपस्या विशेष रूप से माताओं द्वारा संतान की दीर्घायु, स्वास्थ्य और परिवार की समृद्धि के लिए की जाती है।

लोक संस्कृति, गीत और सामूहिक सहभागिता

छठ पूजा केवल व्यक्तिगत साधना नहीं, बल्कि समुदाय आधारित उत्सव है। गांव, मोहल्ले और शहर के घाटों पर पूरा समाज एक साथ उपस्थित होता है। सामाजिक भेदभाव, जाति और आर्थिक अंतर इस पर्व में स्वतः समाप्त हो जाते हैं। एक रोचक तथ्य यह भी है की मुख्यत: इस पर्व को हिन्दु/सनातन समुदाय के लोग मनाते है लेकिन मुस्लिम समुदाय के लोग भी इस पर्व में बढ़ चढ़ के हिस्सा लेते है और इस पर्व को धार्मिक के साथ साथ एक सामाजिक पर्व बनाते है। छठ गीत जो भोजपुरी, मैथिली और मगही भाषाओं में गाए जाते हैं, इस पर्व की आत्मा हैं। ये गीत पीढ़ी दर पीढ़ी लोकस्मृति में सुरक्षित हैं और सूर्य देव तथा छठी मैया की महिमा का गुणगान करते हैं।

समाज को जोड़ने वाला पर्व

छठ पूजा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह अमीर गरीब के बीच की खाई को पाटता है। सूर्य के समक्ष सभी समान होते हैं। नदी तट पर खड़े व्रती और श्रद्धालु एक सांझी आस्था में बंधे होते हैं, जो सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करता है। इस पर्व में प्रसाद की परंपरा भी समानता का संदेश देती है, इतना ही प्रसाद अर्पित किया जाता है, जिसे एक अत्यंत गरीब व्यक्ति भी पूरे आत्मसम्मान के साथ अदा कर सकता है, और उतना ही जिसे एक अत्यंत अमीर व्यक्ति भी चाहकर उससे अधिक नहीं बढ़ा सकता। इससे समाज में समानता की भावना विकसित होती है, जहाँ कोई भी किसी को न कमतर समझता है और न ही श्रेष्ठ।

पर्यावरणीय चेतना और सादगी का संदेश

छठ पूजा को भारत के सबसे पर्यावरण अनुकूल त्योहारों में माना जाता है।

- इसमें मूर्ति पूजा नहीं होती।
- इस पर्व में प्राकृतिक जल स्रोतों की सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- बाँस की टोकरियाँ (सूप दौरा), मिट्टी के दीये और जैव अपघट्य सामग्री का प्रयोग होता है।
- प्रसाद में मौसमी फल, गन्ना, नारियल, ठेकुआ आदि शामिल होते हैं।

यह पर्व आधुनिक समाज को प्रकृति के साथ सह अस्तित्व का संदेश देता है।

यदि छठ पूजा को यह मान्यता मिलती है, तो विदेशों में रहने वाले भारतीयों को सार्वजनिक जल स्रोतों पर पूजा की सुविधा मिलेगी, पर्व को वैश्विक पहचान प्राप्त होगी और भारत की सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर सम्मान मिलेगा।

छठ पूजा केवल एक पर्व नहीं, बल्कि जीवन दर्शन है जो अनुशासन, त्याग, कृतज्ञता और प्रकृति सम्मान का पाठ पढ़ाता है। यह भारतीय संस्कृति की उस आत्मा को प्रकट करती है, जिसमें मानव और प्रकृति एक दूसरे के पूरक हैं। यूनेस्को में इसके संभावित शामिल होने से न केवल इस पर्व की गरिमा बढ़ेगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जुड़े रहने की प्रेरणा भी मिलेगी। छठ महापर्व सचमुच भारत की लोक आस्था, सांस्कृतिक चेतना और पर्यावरणीय दृष्टि का गौरवपूर्ण प्रतीक है।



अमित कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्यास की कीमत

(दृश्य - 1 : जवाहरपुर: संकल्प का बीज)

वह सुबह जो हर दिन प्यास से शुरू होती थी जवाहरपुर में सुबह सूरज से नहीं, सुनीता के कदमों की आहट से शुरू होती थी। अभी आसमान में हल्की-सी नीलिमा ही फैली थी। मुर्गे ने एक बार भी बाँग नहीं दी थी कि सुनीता उठ बैठी। मिट्टी के घर की दीवारें रात की ठंडक से भीगी हुई थीं। खपरैल की छत से ओस की बूँदें टपक रही थीं। सुनीता ने चुपचाप पास रखा पीतल का घड़ा उठाया। रस्सी कंधे पर डाली और बाहर निकलने लगी।"अम्मा...?" एक नींद से भरी आवाज़ ने उसे रोक लिया। वह रमेश था– उसका छोटा बेटा, जिसकी आँखों में बचपन से ज़्यादा समझ बसती थी। "अभी सो जा बेटा," सुनीता ने हल्की मुस्कान के साथ कहा। रमेश ने आँखें मसलते हुए पूछा, "आज भी कुएँ?" सुनीता एक पल के लिए रुक गई। फिर बोली– "जब तक साँस है, तब तक कुआँ।" उस वाक्य में मज़ाक नहीं था, बस एक सच्चाई थी।

लंबा रास्ता और छोटी उम्मीद सुनीता अकेली नहीं थी। उसके साथ चल रही थी निधि– उसकी बड़ी बेटी। निधि ने रस्सी अपने कंधे पर ठीक की और बोली,"अम्मा, आज कल पानी और कम हो गया है।"सुनीता ने गहरी साँस ली। "धरती भी थक जाती है बेटी... जब उससे सिर्फ़ लिया जाए।" रास्ता लंबा था। लगभग तीन किलोमीटर। चारों तरफ सूखी ज़मीन, जले हुए खेत, और बीच-बीच में पगडंडी पर बैठी थकी औरतें। एक औरत बोली, "सुनीता, आज जल्दी आ गई?" सुनीता ने हँसने की कोशिश की, "पानी जल्दी खत्म हो जाता है, इसलिए।" कुआँ - जहाँ उम्मीद और डर साथ रहते थे कुआँ गाँव से दूर था। बहुत पुराना, बहुत गहरा। रस्सियाँ घिस चुकी थीं। बाल्टियाँ जगह-जगह से टूटी हुई। निधि ने नीचे झाँकते हुए कहा, "अम्मा... पानी दिख ही नहीं रहा।" सुनीता ने रस्सी फेंकते हुए कहा, "दिखे या न दिखे, वही हमारी ज़िंदगी है।" जब बाल्टी ऊपर आई,पानी मटमैला था। ऊपर हल्की-सी काई तैर रही थी। निधि ने डरते हुए पूछा, "अम्मा... यह पानी पीने से बीमार नहीं पड़ेंगे?"

सुनीता ने घड़ा भरते हुए जवाब दिया– "बीमारी से ज़्यादा डर भूख और प्यास का होता है।"घर लौटते समय घड़ा और भारी लगने लगा। सुनीता की चाल धीमी हो गई। निधि बोली, "अम्मा, मैं उठाऊँ?"सुनीता ने सिर हिलाया। "नहीं बेटी... यह बोझ माँ का होता है।"घर पहुँचते ही रमेश बाहर आ गया। "अम्मा! पानी आ गया?" उसकी आँखों में चमक थी– जैसे कोई त्यौहार हो। सुनीता ने घड़ा रखा। "हाँ बेटा, लेकिन धीरे पीना।" रमेश ने घूँट लिया। मुँह बना लिया।"अम्मा... पानी अजीब लग रहा है।" सुनीता ने उसके सिर पर हाथ रखा। "आदत डाल ले बेटा... ज़िंदगी भी कभी-कभी ऐसी ही लगती है।"

कुछ ही दिनों में रमेश को तेज़ बुखार हो गया। उसका शरीर तप रहा था। होठ सूख चुके थे। राम बहादुर घबराए हुए बोले, "सुनीता, यह पानी..." सुनीता चुप रही। गाँव के वैद्य ने साफ कहा– "पानी उबालकर पिलाओ, नहीं तो हाल और बिगड़ेगा।" राम बहादुर ने कड़वी हँसी हँसी। "लकड़ी कहाँ से लाएँ? और उबालें किस वक़्त?" उस रात सुनीता पहली बार चुपके से रोई। रमेश की आँखें आधी खुलीं। वह बुदबुदाया–"अम्मा... गंदा पानी मत पीना..." उस वाक्य ने सुनीता के दिल को चीर दिया। रमेश ठीक तो हो गया, लेकिन उसके भीतर एक सवाल बैठ गया– "पानी गंदा क्यों है?" "पानी कम क्यों है?"वह कुएँ को देखता, माँ को देखता,और चुप हो जाता। उसे तब नहीं पता था कि यही सवाल एक दिन उसकी पूरी ज़िंदगी की दिशा तय करेगा।

(दृश्य - 2 : नया नगर की बस्ती)

जवाहरपुर छोड़ते समय सुनीता ने पीछे मुड़कर देखा था। वह कुआँ, वह रास्ता, वह धूल– सब वहीं थे। "चलो,"राम बहादुर ने भारी आवाज़ में कहा,"यहाँ रहकर बच्चों का भविष्य नहीं बनेगा।" रमेश ने माँ का हाथ पकड़ा हुआ था। उसकी आँखों में डर भी था और उत्सुकता भी। "अम्मा, शहर में पानी तो बहुत होगा न?" उसने मासूमियत से पूछा। सुनीता ने जवाब नहीं दिया। उसने बस रमेश के सिर पर हाथ फेर दिया।

नया नगर सचमुच "नया" था। ऊँची इमारतें, तेज़ गाड़ियाँ, शोर और भीड़। पर जहाँ उनका घर था, वह इलाका बस्ती कहलाता था। टिन की छतें,टूटी नालियां, और एक किनारे से गुज़रती पानी की पाइपलाइन। रमेश ने नल देखा तो खुशी से चिल्लाया,"अम्मा! यहाँ कुएँ नहीं, नल है!" सुनीता ने नल खोला। पहले हवा निकली... फिर भूरा, बदबूदार पानी। उसने तुरंत नल बंद कर दिया। "यह पानी नहीं है," उसने धीमे से कहा, "यह बीमारी है।" बस्ती में पानी दिन में सिर्फ एक घंटा आता था। लोग पहले से बाल्टियाँ, ड्रम, टंकी लगा लेते। नल खुलते ही हाहाकार मच जाता– "मेरी बाल्टी हटाओ!" "तुम रोज़ ज़्यादा भरते हो!" "पानी चुराने आया है क्या?" रमेश यह सब देखता। उसकी आँखें चौड़ी हो जातीं। एक दिन उसने एक औरत को कहा, "काकी, थोड़ा धीरे भर लो... सबको चाहिए।" औरत झल्ला गई,"तू कौन होता है समझाने वाला? पानी आता है तो भर लेंगे!" रमेश चुप हो गया। लेकिन भीतर कुछ जलने लगा।

शहर में आने के बाद स्कूल में रमेश ने अलग दुनिया देखी। वहाँ नल साफ़ थे। टॉयलेट में पानी बहता रहता। एक दिन उसने देखा–एक लड़का हाथ धोकर नल बंद करना भूल गया। रमेश ने दौड़कर नल बंद किया। लड़का हँसा, "इतना डरता क्यों है? पानी खत्म थोड़ी हो जाएगा।" रमेश ने धीरे से कहा, "जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ हो जाता है।" लड़का चुप हो गया। एक शाम सुनीता नल के पास बैठी थी। बाल्टी आधी ही भरी थी। "आज पानी कम आया," उसने चिंता में कहा। रमेश बोला,"अम्मा, लोग बहुत पानी बर्बाद करते हैं।" सुनीता ने गहरी साँस ली। "शहर में पानी की कद्र नहीं, क्योंकि प्यास दिखाई नहीं देती।" फिर उसने रमेश को देखा। "तू अलग है बेटा... तू पानी को सिर्फ देखता नहीं, समझता है।"

कुछ महीनों बाद बस्ती में बीमारी फैलने लगी। निधि, जो अब किशोर हो रही थी, बोली, "अम्मा, नल का पानी बदबू मार रहा है।"डॉक्टर ने कहा,"पाइप लाइन लीक है। नाली का पानी मिल रहा है।" राम बहादुर गुस्से में बोले, "नगर निगम क्या कर रहा है?" लोगों ने जवाब दिया,"हम कौन होते हैं पूछने वाले?" रमेश ने यह बात सुनी। उस रात वह सो नहीं पाया। अगले दिन रमेश ने बस्ती के बच्चों को इकट्ठा किया। "जब पानी आए," उसने कहा, "नल खुला मत छोड़ना।" एक बच्चा बोला, "हम क्यों? बड़े लोग छोड़ते हैं।" रमेश ने कहा, "अगर हम नहीं समझेंगे, तो कोई नहीं समझेगा।" उस दिन पहली बार रमेश ने महसूस किया– समझदारी उम्र नहीं देखती।

एक दिन रमेश ने सड़क किनारे देखा– एक आदमी कार धो रहा था। पानी नाली में बह रहा था। रमेश ने हिम्मत जुटाई। "अंकल... नल बंद कर दीजिए।" आदमी भड़क गया। "तू मुझे सिखाएगा? पानी का बिल मैं भरता हूँ!" रमेश की आवाज़ काँप गई, "लेकिन पानी धरती का है..." आदमी हँसता हुआ चला गया। रमेश देर तक वहीं खड़ा रहा। उसकी आँखों में गुस्सा नहीं, दुख था।उस रात रमेश ने माँ से कहा, "अम्मा, लोग क्यों नहीं समझते?" सुनीता ने उसे सीने से लगा लिया। "बेटा, समझ वही पाता है जिसने प्यास सही हो।" रमेश ने सिर उठाकर कहा, "तो मैं लोगों को समझाऊँगा।" सुनीता चुप रही। फिर बोली– "रास्ता मुश्किल होगा।"
रमेश ने पहली बार दृढ़ आवाज़ में कहा– "अगर पानी बचाना मुश्किल है, तो मैं मुश्किल चुनूँगा।" रमेश को तब नहीं पता था कि–यह जिद,यह सवाल, यह तकलीफ एक दिन उसे समाधान खोजने की राह पर ले जाएगी। लेकिन अभी रास्ता लंबा था। बहुत लंबा।

(दृश्य - 3 : सवालों से समाधान तक)

नया नगर की बस्ती में रहते हुए रमेश अब बड़ा हो रहा था। उम्र बढ़ने के साथ-साथ उसके सवाल भी बढ़ रहे थे। स्कूल से लौटकर वह अक्सर नल के पास बैठ जाता। टपकते पानी को देखता रहता। निधि ने एक दिन टोका,"क्या देखता रहता है? पानी तो रोज़ टपकता है।" रमेश ने बिना नज़र हटाए कहा, "यही तो देख रहा हूँ दीदी... टपकता नहीं, ज़ाया होता है।" निधि चुप हो गई।

हाई स्कूल में रमेश को पर्यावरण विज्ञान पढ़ाया गया। जब अध्याय आया – जल संसाधन, तो रमेश की आँखें चमक उठीं। अध्यापक बोले,"धरती पर पानी बहुत है, लेकिन पीने लायक बहुत कम।" रमेश ने हाथ उठाया। "सर, अगर पानी इतना कम है, तो लोग उसे बर्बाद क्यों करते हैं?"कक्षा में सन्नाटा छा गया। अध्यापक ने कहा, "क्योंकि संकट दिखाई नहीं देता।" उस दिन रमेश ने पहली बार महसूस किया– ज्ञान सवाल से शुरू होता है। एक रात सुनीता ने रमेश से कहा, "बेटा, पढ़ाई पर ध्यान दे। ये पानी-वानी बाद में देखना।" रमेश ने धीरे से जवाब दिया, "अम्मा, अगर पानी नहीं होगा, तो पढ़ाई किसके लिए?" सुनीता की आँखें भर आईं। उसने रमेश का माथा चूम लिया। "तू मेरे से ज़्यादा समझदार है।"

रमेश ने कॉलेज में पर्यावरण और जल प्रबंधन चुना। वहाँ उसने पहली बार शब्द सुने– भूजल स्तर, पाइपलाइन लीकेज, वर्षा जल संचयन, जल शोधन। एक दिन प्रोफेसर ने कहा,

"समस्या समझ लेना आसान है, समाधान लागू करना कठिन।" रमेश ने मन ही मन कहा– "मैं कठिन रास्ता चुनूँगा।" कॉलेज के प्रोजेक्ट के लिए रमेश ने अपनी बस्ती को चुना। उसने घर-घर जाकर सवाल पूछे– "पानी दिन में कितनी देर आता है?" "कितने लोग बीमार पड़ते हैं?" "पानी उबालते हैं क्या?" एक आदमी झल्लाया, "तू सर्वे करेगा या पानी देगा?" रमेश ने विनम्रता से कहा, "पानी तभी मिलेगा, जब हम सच बोलेंगे।" धीरे-धीरे लोगों ने बताना शुरू किया। रमेश की नोटबुक भरती गई, और उसका दिल भी।

रमेश ने बस्ती की एक छत पर वर्षा जल संचयन का छोटा मॉडल लगाया। लोग हँसे। "बारिश में पानी इकट्ठा करेगा?" "यह सब किताबों में अच्छा लगता है।" रमेश चुप रहा। पहली बारिश आई। ड्रम भर गया। निधि ने हैरानी से कहा, "यह तो साफ़ है!" सुनीता ने हाथ जोड़ दिए। "हे भगवान..."कुछ घरों ने रमेश से कहा, "हमारे यहाँ भी लगा दो।" रमेश दिन-रात लगा रहा। पाइप जोड़े,फिल्टर लगाया।लोगों को समझाया। धीरे-धीरे– पानी थोड़ा साफ़ हुआ बीमारियाँ कम हुईं, निधि बोली, "डॉक्टर के चक्कर कम हो गए।" रमेश मुस्कराया। लेकिन यह मुस्कान स्थायी नहीं थी।

एक शाम कुछ लोग इकट्ठा हुए। एक आदमी बोला, "यह सब करने से क्या फायदा? सब लोग तो पानी बर्बाद करते हैं।" दूसरा बोला, "सरकार क्यों नहीं करती यह सब?" तीसरा गुस्से में बोला, "तू कौन होता है हमें सुधारने वाला?" रमेश ने शांत स्वर में कहा, "मैं सुधारने नहीं, बचाने आया हूँ।" लेकिन शब्द हवा में खो गए। उस रात सुनीता ने रमेश से कहा, "बेटा, लोग बदलने से डरते हैं।" रमेश ने जवाब दिया, "अम्मा, डर से ज़्यादा प्यास डरावनी है।" सुनीता ने उसकी आँखों में देखा। वहाँ डर नहीं था,बस ज़िद थी।

कॉलेज के आख़िरी साल में रमेश ने निर्णय लिया– एक संस्था बनाएगा। जो पानी की समस्या बताए, समाधान सिखाए, लोगों को जोड़े निधि ने कहा, "लोग तुझे पागल कहेंगे।" रमेश मुस्कराया। "अगर पानी बचाना पागलपन है, तो मैं पागल ही सही।" बस्ती में पानी की हालत थोड़ी सुधरी थी लेकिन विरोध की आग भीतर ही भीतर जल रही थी। लोग कहते– "यह हमें शर्मिंदा करता है।" "यह दिखाता है कि हम गलत हैं।"
रमेश समझ नहीं पा रहा था– सच इतना कड़वा क्यों होता है?

(दृश्य - 4 : जब सही होना अपराध बन गया)

कॉलेज खत्म होते ही रमेश ने अपनी बची-खुची जमा पूँजी निकाली। निधि ने अपनी थोड़ी बचत दी। सुनीता ने चुपचाप अपने कंगन उतारकर रख दिए। "अम्मा, यह मत करो..." रमेश की आवाज़ भर आई। सुनीता ने दृढ़ता से कहा, "अगर तू पानी बचा रहा है, तो यह कंगन भी किसी काम के हैं।" उस दिन एनजीओ का नाम रखा गया– "जल-संजीवनी" उद्देश्य साफ था– स्वच्छ पानी, समझदार समाज। रमेश ने पोस्टर छपवाए– "पानी बहाना, भविष्य बहाना है।" "आज नल बंद करो, कल जीवन खोलो।" वह बच्चों को साथ लेकर गली-गली घूमता। "नल खुला मत छोड़ो!" "पानी बचाओ!" कुछ लोग हँसते। कुछ ताली बजाते। कुछ मुँह फेर लेते। एक आदमी बोला, "इतना शोर मचाकर क्या मिलेगा?" रमेश ने शांति से कहा, "शायद पानी।"

एक बैठक में रमेश ने कहा, "अगर हम हर दिन एक बाल्टी पानी बचाएँ, तो पूरी बस्ती का संकट कम हो सकता है।" भीड़ में से आवाज़ आई, "सब क्यों बचाएँ? जब सब बर्बाद करते हैं!" दूसरी आवाज़, "सरकार क्या कर रही है?" रमेश ने जवाब दिया, "सरकार से पहले नल हमारे हाथ में है।" भीड़ में खुसुर-फुसुर बढ़ गई। कुछ दिनों बाद बातें बदलने लगीं। "यह एनजीओ पैसे खा रहा है।" "यह दिखावा करता है।" "यह हमें नीचा दिखाता है।" रमेश हैरान था। उसने माँ से कहा, "अम्मा, पानी बचाने में बुराई क्या है?" सुनीता ने गहरी साँस ली। "बुराई नहीं बेटा... आईना दिखाने में डर लगता है लोगों को।"

एक दिन रमेश पोस्टर लगा रहा था। तीन आदमी आए। एक ने पोस्टर फाड़ दिया। "हमें मत सिखा।" रमेश ने शांत स्वर में कहा, "भैया, यह पोस्टर है, आदेश नहीं।" दूसरे ने गुस्से में कहा,"तू हमें शर्मिंदा करता है!" रमेश ने पहली बार ऊँची आवाज़ में कहा, "अगर पानी बचाना शर्म है, तो मुझे मंज़ूर है!" भीड़ जमा हो गई। उस रात सुनीता सो नहीं पाई। "बेटा, लोग अच्छे नहीं हैं," उसने डरते हुए कहा। रमेश ने उसके हाथ पकड़ लिए। "अम्मा, अगर मैं रुक गया, तो कौन बोलेगा?" सुनीता की आँखों से आँसू बह निकले। "मैं तुझे खोना नहीं चाहती..."

वह एक साधारण दिन था। रमेश बच्चों के साथ जल-जागरूकता रैली निकाल रहा था। नारे लग रहे थे–"पानी है तो कल है!" "जल है तो जीवन है!" अचानक पत्थर उड़ा। फिर दूसरा। फिर धक्का। भीड़ उग्र हो गई। "चुप कराओ इसे!" "बहुत बनता है समाज सुधारक!" रमेश गिर पड़ा। उसे याद है– माँ का चेहरा, मिट्टी की गंध और पानी की प्यास, फिर अँधेरा। जब आँख खुली, सफेद दीवारें थीं। निधि पास बैठी रो रही थी। "तू ठीक है..." उसने कांपती आवाज़ में कहा। सुनीता ने रमेश का हाथ पकड़ा उसकी आँखें सूजी हुई थीं। "क्यों किया बेटा?" उसने रोते हुए पूछा। रमेश ने धीमे से कहा, "अम्मा...अगर मैं नहीं करता, तो यह सब क्यों सहता?"
रमेश का शरीर टूटा था, पर सोच नहीं।अस्पताल की खिड़की से उसने बाहर देखा– नल खुला था। पानी बह रहा था। उसकी आँखें भर आई।

(दृश्य - 5 : सवाल जो मरते नहीं)

अस्पताल के बाहर वही बस्ती थी। वही टूटी सड़कें। वही नालियों की बदबू। वही नल– जिनसे पानी बहता रहता था। लेकिन उस दिन हवा में कुछ अलग था– चुप्पी। लोग दूर से अस्पताल की ओर देखते, पर पास आने की हिम्मत किसी में नहीं थी। एक बुज़ुर्ग ने धीमे से कहा,"गलत हुआ... बहुत गलत।" दूसरा बोला, "पर वह भी तो ज़्यादा बोलता था..." पहला चुप हो गया। रमेश अस्पताल के बिस्तर पर लेटा था। सिर पर पट्टी, हाथ में ड्रिप। निधि खिड़की के पास खड़ी थी। "दर्द?" उसने पूछा। रमेश ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, "शरीर में कम... मन में ज़्यादा।" सुनीता चुपचाप पास बैठी थी। उसकी आँखों में आँसू सूख चुके थे। "अब क्या करोगे?" उसने धीरे से पूछा। रमेश ने आँखें बंद कर लीं। "यही सोच रहा हूँ अम्मा– अगर सच बोलने की यही कीमत है, तो लोग झूठ क्यों चुनते हैं?"

रमेश पर हुए हमले की खबर स्थानीय अख़बारों में छपी। "जल-जागरूकता कार्यकर्ता पर हमला" "पानी बचाने की बात पर हिंसा" कुछ लोग सहम गए। कुछ को शर्म आई पर कुछ अब भी बोले– "हमारा क्या फ़ायदा?" "जल-संजीवनी" का दफ़्तर बंद पड़ा था। पोस्टर फटे हुए। पाइप उखड़े हुए। निधि ने कहा, "शायद अब इसे बंद कर देना चाहिए।" सुनीता ने कुछ नहीं कहा। रमेश ने धीरे से कहा, "नहीं... अगर अब बंद हुआ, तो यह मान लेना होगा कि पानी से ज़्यादा डर बड़ा है।"

ठीक होने के बाद रमेश ने एक छोटी सभा बुलाई। वह माइक के सहारे खड़ा था। आवाज़ कमज़ोर थी पर शब्द भारी। "मैं आपसे माफ़ी नहीं माँगने आया," उसने कहा, "और न ही आपको दोष देने।" लोग सिर झुकाए खड़े थे। "मैं बस यह पूछना चाहता हूँ– जब पानी खत्म होगा, तो आप किसे दोष देंगे?" भीड़ में सन्नाटा। "सरकार को?" "किस्मत को?" "या उस बच्चे को, जिसने नल खुला छोड़ दिया?"सुनीता आगे आई। उसके हाथ काँप रहे थे पर आवाज़ स्थिर थी। "मैं वही माँ हूँ," उसने कहा, "जो तीन किलोमीटर चलकर गंदा पानी लाती थी।" "मैं वही माँ हूँ, जिसका बेटा आज यहाँ खड़ा है–टूटा हुआ, पर सच्चा।" उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। "अगर पानी बचाना गुनाह है, तो मैं भी गुनहगार हूँ।" भीड़ में से एक औरत बोली, "हमसे गलती हुई।" एक आदमी बोला, "हमें सोचना चाहिए था।" सब नहीं बदले। पर कुछ बदले और बदलाव हमेशा कुछ से शुरू होता है।

रमेश ने एनजीओ को छोटा किया पर मजबूत। अब वह– बच्चों से बात करता स्कूलों में जाता झगड़ा नहीं, संवाद करता उसने समझ लिया था–समझ डर से नहीं, धैर्य से आती है। एक सुबह रमेश ने देखा– बस्ती में एक बच्चा नल बंद कर रहा था। रमेश ने मुस्कराकर पूछा, "क्यों बंद किया?"बच्चे ने कहा, "माँ ने कहा– पानी रोता है।" रमेश की आँखें भर आईं।

पानी की समस्या नल की नहीं, नियत की है। जब तक हम यह कहते रहेंगे– "सब करते हैं" तब तक सब भुगतेंगे। पानी बचाइए – क्योंकि प्यास किसी को माफ़ नहीं करती। यह कहानी रमेश की नहीं, हर उस इंसान की है जो सच जानता है, पर चुप रहता है। अगर आपने यह कहानी पढ़कर एक नल भी बंद किया–तो यह कहानी सफल है।



हेमलता शर्मा,
लेखापरीक्षक

विद्यार्थी काल - चरित्र निर्माण काल

विद्यार्थी काल जीवन का सबसे सर्वश्रेष्ठ समय है। यह वह समय है जब मनुष्य का जीवन अधिक उलझा हुआ नहीं होता इसलिए अक्सर मनुष्य अपनी विद्यार्थी जीवन की बातों को याद कर खुश होते है, आनंद का अनुभव करते हैं।

- **शिक्षा वह जो अच्छे संस्कारों का निर्माण करे।**

विद्यार्थी काल में जो संस्कार बनते है उन पर जीवन की मंजिल खड़ी होती है। विद्यार्थी जीवन में जो आदतें पड़ जाती हैं वह जीवन में पक्की हो जाती है, जैसे एक कोमल पौधे के विकास के लिए एक सहारा दिया जाता है ताकि वह जब वृक्ष बनकर खड़ा हो तो सीधा और मजबूत हो, वैसे ही, विद्यार्थी जीवन भी शीघ्र प्रभावित होने वाला जीवन है अत: उसे ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो उसमे अच्छे संस्कारों का निर्माण करे।

- **विद्यार्थियों का लक्ष्य जीवन के सत्य पहलू को जानना भी है।**

विद्यार्थियों का लक्ष्य केवल पढ़ना, लिखना या एक श्रेणी को उत्तीर्ण कर अगली श्रेणी में पहुँचना ही नहीं अपितु संसार में जो कुछ हो रहा है उसके सत्य पहलू को जानना भी है। विद्या अध्ययन के साथ-साथ जीवन की नीव को मजबूत बनाने के लिए चाहिए सात्विक भोजन, अच्छा स्वास्थ्य, श्रेष्ठ चरित्र, ब्रह्मचर्य और शुद्ध वायुमंडल। जो मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करते, वे शरीर और मस्तिष्क के विकास के लिए रसायन तत्वों की मूल्यवान शक्ति का क्षय करते है। जो मनुष्य शुद्ध सात्विक भोजन नहीं करते, वे मन का संतुलन खो बैठते है तथा उनके मन में पाशविक एवं राक्षसी वृत्तियां जन्म ले लेती है और वे अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त रहते हैं। जो विद्यार्थी बुरे दोस्तों के संग में रहते है, वे अपनी अमूल्य निधि को गवां देते हैं अर्थात् चरित्र खराब कर लेते हैं। लेकिन उनको समझना होगी कि चरित्र पर लगा दाग जल्दी साफ़ नहीं होता ।

दरअसल चरित्रहीन व्यक्ति गुणहीन बन जाता है, वह आत्मविश्वास खो बैठता है, किसी से नज़र मिला कर बात नहीं कर सकता, उसे आत्मग्लानी की अनुभूति होती है। वह हीन भावना से ग्रस्त रहता है। उसके मन और बुद्धि की एकाग्रता भी भटक जाती है और मानसिक शक्ति का क्षय भी होने लगता है। समाज में जब कोई व्यक्ति चरित्र पर दाग लगाने वाला बुरा कर्म करता है तो समाज की नजर में समझा जाता है कि यह काला मुँह करके आया है। वास्तव में ऐसे व्यक्ति की आत्मा भी कलुषित समझी जाती है।

➢ **श्रेष्ठ चरित्र ही मनुष्य का रक्षा कवच है।**

देखा जाए तो चरित्र निर्माण हर मनुष्य का ध्येय होना चाहिए लेकिन विद्यार्थियों के लिए विशेष ध्यान रखने का विषय है इसलिए पहले के गुरुकुल की शिक्षा का नियम होता था की विद्यार्थी 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करें। श्रेष्ठ चरित्र निर्माण की पहली शर्त यही है - ब्रह्मचर्य व्रत का पालन। चरित्रवान व्यक्ति हर परिस्थिति का सामना कर सकता है तथा समाज का मार्गदर्शन भी सुचारू रूप से कर सकता है। ऐसा चरित्रवान व्यक्ति ही देश के उत्थान का निमित्त बन पाता है। श्रेष्ठ चरित्र मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत है जिससे असंभव को भी संभव किया जा सकता है। यह मनुष्य का रक्षाकवच है इसलिए कहा गया है कि मनुष्य सिर्फ अपने चरित्र की रक्षा करे तो यह चरित्र मनुष्य की ताकत बन हर परिस्थिति में उसकी रक्षा कर सकता है।

मुख्य बात यह है की हमारा जीवन हमे हर परिस्थिति में कुछ न कुछ सिखाता रहता है इसलिए इस जीवन में हमे खुद को विद्यार्थी मानकर अपने चरित्र में निरंतर उत्थान के प्रयास करते रहने चाहिए ताकि प्रत्येक मनुष्य समाज और अपने देश के लिए एक आदर्श स्थापित कर सके।



मोनू जांगिड़,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

लेखापरीक्षा की भाषा और अनुवाद की परिभाषा

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग देश की वित्तीय पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा और जवाबदेही का एक सुदृढ़ स्तंभ है। इस विशाल और गरिमामयी विभाग में जहाँ एक ओर देश के सबसे मेधावी मस्तिष्क वित्तीय आंकड़ों, नियमों और विनियमों का विश्लेषण करते हैं, वहीं दूसरी ओर राजभाषा अनुभाग इन जटिल बजटीय निष्कर्षों को जन-जन की भाषा में रूपांतरित कर लोकतंत्र के वास्तविक उद्देश्यों को पूरा करता है। इस पूरी प्रक्रिया में कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी की भूमिका दोहरे मोर्चों पर सक्रिय रहती है, जहाँ एक तरफ गहन मानसिक श्रम की मांग करने वाला तकनीकी अनुवाद होता है, वहीं दूसरी तरफ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की सख्त समय-सीमाएं और प्रशासनिक प्रबंधन।

यहाँ वास्तविक संगठनात्मक चुनौती लेखापरीक्षा की इस तकनीकी भाषा को समझना और अनुवाद की व्यावहारिक परिभाषा को धरातल पर उतारना है। अक्सर कार्यालय की कार्यप्रणाली में यह मान लिया जाता है कि अनुवाद का कार्य केवल शब्दकोश पलटना या वर्तमान तकनीकी युग में किसी अनुवाद उपकरण की मदद से त्वरित रूपांतरण कर देना है। परंतु संगठनात्मक यथार्थ बिल्कुल इसके विपरित है जो भाषाविद् और प्रशासनिक प्रबंधक दोनों की कुशलताओं की मांग करता है।

अनुवाद कला पर विचार करते हुए विद्वान **उत्पल बैनर्जी** ने बिल्कुल सटीक लिखा है कि अनुवाद केवल शब्दों का नहीं होता, उसमें मूल भाव एवं शिल्प के साथ परंपरा और संस्कृति भी प्रतिध्वनित होती है। इसके अभाव में अनुवाद यांत्रिक रह जाता है, जिसमें मूल लेखन की न तो आत्मा होती है, न ही आस्वाद। हमारे विभाग के संदर्भ में यह बात और भी संवेदनशील हो जाती है। हमारे सामने आने वाले दस्तावेज कोई सामान्य गद्य नहीं होते, वे विनियोग लेखाओं, निष्पादन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन और राजकोषीय नियंत्रण जैसे भारी-भरकम और विधिक वित्तीय नियमों से बंधे होते हैं।

यहाँ अनुवादक को एक भाषाविद् की भूमिका निभानी पड़ती है, जहाँ उसे लेखापरीक्षा की तकनीकी भाषा की आत्मा को पहचानना होता है। अंग्रेजी के प्रशासनिक और लेखापरीक्षा संबंधी वाक्यों की संरचना अक्सर इतनी जटिल होती है कि यदि उनका यांत्रिक या केवल शाब्दिक अनुवाद कर दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ होना निश्चित है। लेखापरीक्षा के किसी निष्कर्ष में प्रयुक्त एक गलत शब्द पूरे प्रतिवेदन के अर्थ और निर्णय को बदल सकता है। इसलिए हमारे

लिए अनुवाद की परिभाषा केवल शब्दों का प्रतिस्थापन नहीं, बल्कि एक गंभीर नैतिक और विधिक जिम्मेदारी है। हमें अंग्रेजी के उस प्रशासनिक स्वरूप को ऐसी गरिमामयी और सुबोध हिंदी में ढालना होता है जो सरकारी मानकों पर भी खरी उतरे और जिसे कार्मिक तथा आम पाठक भी आसानी से समझ सके।

अनुवाद की इस महत्ता और मौलिकता को रेखांकित करने के लिए इतिहास और समकालीन समाज में कई महत्वपूर्ण उदाहरण मिलते हैं। प्रसिद्ध भाषाविदों ने लिखा है कि अनुवादक वास्तव में 'नींव का पत्थर' होता है जो पूरी इमारत को पाठक की भाषा में एक-एक ईंट रखकर खड़ा करता है, लेकिन अक्सर उसकी भूमिका को अदृश्य समझ लिया जाता है। यदि अनुवाद त्रुटिपूर्ण हो तो निंदा अनुवादक की होती है और यदि वह उत्कृष्ट हो तो प्रशंसा मूल लेखक को मिलती है।

इस 'नींव के पत्थर' की संवेदनशीलता को फिल्म जगत के उस प्रसंग से भी समझा जा सकता है जब महानायक **अमिताभ बच्चन** ने रोमन लिपि में लिखे हिंदी संवादों को लौटाते हुए कहा था कि उन्हें अपने संवाद केवल देवनागरी लिपि में ही चाहिए क्योंकि भाषा का वास्तविक रस उसकी मूल लिपि में ही निखरता है। ठीक इसी प्रकार, **महात्मा गांधी** ने भी कहा था कि जो आंतरिक अनुभूति उन्हें 'राम' नाम से होती है वैसी वे 'गॉड' कहने में महसूस नहीं कर पाते। एक कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी के रूप में हमारा दैनिक संघर्ष भी इसी अनुभूति को बचाने का है।

जब विभाग की विभिन्न शाखाएं महीनों की मेहनत के बाद अपने लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों को अंतिम रूप देती हैं तो प्रकाशन से ठीक पहले समय-सीमा का तात्कालिक दबाव अनुवादकों पर आ जाता है। "कल सुबह यह प्रतिवेदन मुख्यालय भेजना है" या "इसे संसद के पटल पर रखा जाना है"–इन वाक्यों के साथ आने वाली फाइलें रातों की नींद और दिन का चैन भूलकर काम करने की मांग करती हैं। हम कंप्यूटर स्क्रीन पर एक तरफ 'कंठस्थ/भाषिणी' जैसे अनुवाद टूल्स को खोलते हैं तो दूसरी तरफ तकनीकी शब्दकोशों से जूझते हैं। जब वह प्रतिवेदन बिना किसी भाषाई त्रुटि के समय पर प्रकाशित हो जाता है तो राजभाषा अनुभाग फिर से अगली अदृश्य चुनौती के लिए अपनी कमर कस लेता है लेकिन इस संगठनात्मक भूमिका को निभाने में भी एक अनूठा सुकून और गर्व है क्योंकि हम जानते हैं कि हमारे बिना वह लेखापरीक्षा प्रतिवेदन अधूरा है।

आधुनिक दौर में प्रशासनिक हिंदी के प्रयोग को लेकर एक बड़ी बहस तकनीकी शब्दावली के सरलीकरण की है। संवाद और संदर्भ के हिसाब से ही हमेशा शब्दों का चयन होना चाहिए। 'सावधान! आगे पुलिया संकीर्ण है' के स्थान पर 'पुलिया संकरी है' लिखना आम आदमी के लिए अधिक व्यावहारिक और सुबोध होता है। यही द्वंद्व एक अनुवाद अधिकारी के सामने हर रोज

आता है। जहाँ 'मशीन' और 'ऑपरेटर' के लिए 'यंत्र' और 'यंत्री' जैसे पारिभाषिक शब्दों को समझना और याद रखना सरल है वहीं कई जगहों पर अनुवाद इतने दुरूह हो जाते हैं कि वे प्रयोग करने लायक ही नहीं बचते।

हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम भाषा के प्रवाह और प्रयोग को प्राथमिकता दें। यदि हम लेखापरीक्षा की तकनीकी भाषा को सरल प्रशासनिक हिंदी में समझा सकें तो विभाग में हिंदी के प्रति रुचि और स्वीकार्यता अपने आप बढ़ जाएगी। जैसा कि भाषाविदों का मानना है– शब्द कठिन या सरल नहीं होते, वे केवल परिचित या अपरिचित होते हैं। प्रसिद्ध विद्वान **मौलवी बहीउद्दीन 'सलीम'** ने लिखा था कि *"उर्दू जिस जमीन पर खड़ी है, वह जमीन वास्तव में हिंदी की ही है, जिस पर अन्य भाषाओं के पौधे लगाए गए हैं; यदि वह जमीन निकाल दी जाए तो वजूद ही समाप्त हो जाएगा"*। लेखापरीक्षा के संदर्भ में भी यही सत्य है; चाहे लेखापरीक्षा दल अंग्रेजी में अपनी रिपोर्ट तैयार करे, धरातल पर उसकी आत्मा राजभाषा के प्रशासनिक यथार्थ से ही जुड़ी होती है।

एक कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी का वास्तविक संगठनात्मक संघर्ष तब और प्रगाढ़ हो जाता है जब उसे अपनी भूमिका को दो अलग-अलग मोर्चों पर बांटना पड़ता है। अनुवाद के लिए जहाँ गहरे ध्यान, मानसिक शांति और एकाग्रता की आवश्यकता होती है, वही राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और प्रशासनिक दायित्वों (जैसे तिमाही प्रगति रिपोर्ट, कार्यशालाएं, बैठकें आदि) का स्वरूप अत्यंत गतिशील और समय-बद्ध होता है।

अक्सर यह देखा गया है कि जब बड़े प्रतिवेदनों या लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों के अनुवाद की व्यस्ततम अवधि होती है, उसी समय राजभाषा नीति के अनुपालन की सख्त समय-सीमाएं भी सामने खड़ी होती हैं। भाषाविद् के रूप में गहरी सोच का काम और प्रबंधक के रूप में प्रशासनिक दायित्व–इन दोनों कार्यों को एक ही समय पर संतुलित करना संगठनात्मक रूप से एक बड़ी चुनौती बन जाता है। इस दोहरे दबाव के कारण कई बार तकनीकी अनुवाद की गति और प्रशासनिक लक्ष्यों की समय-सीमाओं के बीच संतुलन बना पाना अत्यंत कठिन हो जाता है। अतः राजभाषा अनुभाग के कार्यों के सुचारू संचालन और कार्य की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए यह आवश्यकता महसूस होती है कि कार्यप्रणाली में एक स्पष्ट संगठनात्मक विभाजन हो। अनुवाद जैसे अत्यधिक केंद्रित बौद्धिक कार्य के लिए एक समर्पित व्यवस्था हो और प्रशासनिक फाइलों तथा डेटा संकलन के कार्यों के लिए अनुभाग में अन्य सहायक कार्मिकों की सहभागिता सुनिश्चित की जाती रहे, तो विभाग की कार्यकुशलता दोगुनी हो सकती है। यह श्रम-विभाजन न केवल समय-सीमाओं के शत-प्रतिशत पालन को सुनिश्चित करेगा अपितु अनुवाद की स्पष्टता और तकनीकी शुद्धता को भी सुनिश्चित करेगा।

इस संगठनात्मक संतुलन और सामूहिक प्रयास की सबसे बड़ी सीख हमें 'संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण' के दौरान मिलती है। यह समय पूरे कार्यालय के लिए एक बड़ी परीक्षा का होता है। उस दौरान सैकड़ों पृष्ठों की प्रश्नावली तैयार करने से लेकर फाइलों के रख-रखाव का काम सामूहिक समन्वय के माध्यम से ही संभव हो पाता है। जब वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में पूरा अनुभाग और अन्य शाखाओं के कार्मिक मिलकर इस कार्य में सहयोग करते हैं, तभी हम समय-सीमा के अंदर इस महत्वपूर्ण कार्य को सफलतापूर्वक कर पाते हैं। निरीक्षण की यह सफलता स्वतः सिद्ध करती है कि राजभाषा का कार्य किसी एक पद या व्यक्ति तक सीमित न होकर, एक सामूहिक और एकीकृत उत्तरदायित्व है। यदि यही सामूहिक समन्वय और स्टाफ का सहयोग दैनिक प्रशासनिक कार्यों में भी निरंतर बना रहे–जहाँ अनुवाद अधिकारी केवल भाषा की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित कर सके और सहायक स्टाफ प्रशासनिक कड़ियों को संभाले–तो कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के आदर्श लक्ष्यों को बिना किसी बाधा या विलंब के प्राप्त किया जा सकता है।

तमाम व्यस्तताओं, काम के भारी बोझ और लगातार पीछा करती समय-सीमाओं के बीच कभी-कभी थकान हावी होना स्वाभाविक है। लेकिन इस आपाधापी के बीच जब राजभाषा विभाग या मुख्यालय से किसी रिपोर्ट की समय पर प्रस्तुति के लिए सराहना मिलती है, या जब कोई जटिल लेखापरीक्षा पैरा अपनी शुद्ध और सरल हिंदी में छपकर सामने आता है, तो वह सारी थकान एक पल में विलुप्त हो जाती है।

हम केवल अनुवादक नहीं हैं, बल्कि हम विभाग की वित्तीय सत्यनिष्ठा और पारदर्शी संदेश को देश की राजभाषा के माध्यम से आगे बढ़ाने वाले सेतु हैं। इस पद पर ज़िम्मेदारियाँ और चुनौतियाँ भले ही बड़ी हैं, लेकिन आपसी तालमेल, सही सोच और सामूहिक प्रयासों से हम हर बाधा को पार कर सकते हैं। यही निरंतर समन्वय और कर्मठता आने वाले समय में विभाग में राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक सुदृढ़ तथा सुगम बनाएगी।

हिंदी पखवाड़ा - 2025

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में केंद्र सरकार के कार्यालयों में प्रतिवर्ष राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य हेतु सितंबर माह में हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य, नई दिल्ली कार्यालय में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ हिंदी दिवस एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन (14 एवं 15 सितंबर, 2025) माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर-कमलों से महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्ज़िबिसन सेंटर, गांधीनगर, गुजरात से हुआ।



माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह, गुजरात के गांधीनगर में स्थित महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्ज़िबिसन सेंटर में आयोजित हिंदी दिवस एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा-2025 के आयोजन हेतु विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी), प्रधान निदेशक के निदेशानुसार विभिन्न समितियों/निर्णायक मंडल का गठन किया गया। हिंदी दिवस (14 सितंबर, 2025) का महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्ज़िबिसन सेंटर, गांधीनगर, गुजरात से शुभारंभ के पश्चात हमारे कार्यालय में दिनांक 18.09.2025 से हिंदी पखवाड़ा से संबंधित कार्यक्रम/गतिविधियाँ शुरू की गई।

हिंदी पखवाड़ा-2025 के दौरान सर्वप्रथम दिनांक 18.09.2025 एवं 19.09.2025 को क्रमशः "राजभाषा कार्यान्वयन में व्यावहारिक कठिनाइयाँ" एवं "हिंदी के ई-टूल्स" विषयों पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। अतिथि संकाय के रूप में कार्यशाला के लिए क्रमशः श्रीमती अलका सिन्हा, पूर्व सहायक निदेशक (रा.भा.), एयर इंडिया एवं श्री श्याम सुंदर कथूरिया, निदेशक (रा.भा.), कर्मचारी राज्य बीमा निगम को आमंत्रित किया गया जिससे कार्यालय के नामित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को व्यावहारिक कठिनाइयों से संबंधित ज्ञान अर्जित किया एवं एआई के युग में हिंदी में स्मार्ट तरीके से कार्य

करने के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी के ई-टूल्स की जानकारी प्रदान की गई। उक्त अवधि के दौरान कुल 19 कार्मिकों ने कार्यशाला में भाग लिया।



श्रीमती अलका सिन्हा,
पूर्व सहायक निदेशक (रा.भा.)
एयर इंडिया
अतिथि संकाय (कार्यशाला)



"हिंदी कार्यान्वयन में व्यावहारिक कठिनाइयाँ" विषय पर आयोजित कार्यशाला में अतिथि संकाय, श्रीमती अलका सिन्हा, स.निदेशक (रा.भा.) कार्यालय के श्री योगेन्द्र कुमार, उप निदेशक (प्रशासन) एवं कार्यशाला में नामित कार्मिकों के साथ



श्री श्याम सुंदर कथूरिया,
निदेशक (रा.भा.)
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
अतिथि संकाय (कार्यशाला)



"हिंदी के ई-टूल्स" विषय पर आयोजित कार्यशाला में अतिथि संकाय, श्री श्याम सुंदर कथूरिया, निदेशक (रा.भा.) कार्यालय के श्री रामशरण मीना, उप निदेशक एवं कार्यशाला में नामित कार्मिकों के साथ

दिनांक 22.09.2025 को "हिंदी का भविष्य एवं भविष्य की हिंदी" विषय पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके लिए विषय विशेषज्ञ श्री पूरनचंद टंडन, पूर्व सीनियर प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं श्री राजा राम, उप महाप्रबंधक, दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन को आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों ने राजभाषा "हिंदी के भविष्य एवं भविष्य की हिंदी" विषय पर अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए कार्मिकों के प्रश्नों के भी सटीक उत्तर दिए तथा कार्मिकों को हिंदी के उज्ज्वल भविष्य के लिए निरंतर प्रयासरत रहने हेतु प्रेरित किया।





"हिंदी का भविष्य एवं भविष्य की हिंदी" विषय पर आयोजित विशेष कार्यक्रम में डॉ. पवन कुमार कोंडा, विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी), प्रधान निदेशक अतिथि संकायों का कार्यक्रम के दौरान स्वागत करते हुए

इसी दिन अपराह्न में कविता पाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय परिसर के विभिन्न कार्यालयो के प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं कार्यक्रम को सफल बनाया।



श्री रामशरण मीना (उप निदेशक) एवं श्री वैभव कोल्हे, व.ले.प.अ. कविता पाठ कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों के साथ

हिंदी पखवाड़ा-2025 के दौरान इस वर्ष आयोजित कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। दिनांक 23.09.2025 को कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में मसौदा एवं टिप्पण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके पश्चात इसी दिन अपराह्न में कार्यालय के मनोरंजन कक्ष में अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

24.09.2025 को कार्यालय मनोरंजन कक्ष में वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय "सोशल मीडियाः वरदान या अभिशाप?" रखा गया था जिस पर प्रतिभागियों ने बेहतर ढंग से अपने-अपने तर्क/मत रखे। इसके पश्चात इसी दिन अपराह्न में सार-लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा-2025 की प्रतियोगिताओं का अंतिम दिन राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के नाम रहा जिसका आयोजन दिनांक 25.09.2025 को किया गया। इस प्रतियोगिता में कार्यालय की नियमित प्रकृति के अनुरूप विषयों पर विज़ुअल्स माध्यम से प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले कार्मिकों ने न केवल राजभाषा के प्रति संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व को सरलता से समझा बल्कि प्रतियोगिता में भागीदारी के साथ-साथ अपने ज्ञान को भी अद्यतित किया।

हिंदी पखवाड़ा-2025 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन दिनांक 30.09.2025 को किया गया। सहायक निदेशक (रा.भा.) ने उक्त कार्यक्रम में हिंदी पखवाड़ा-2025 के दौरान संचालित कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं के विषय में विस्तृत रूप से बताया। पिछले 05 वर्षों के दौरान हिंदी प्रशिक्षण साथ ही सहायक निदेशक (रा.भा.) ने महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्ज़िबिसन सेंटर, गांधीनगर, गुजरात में आयोजित हिंदी दिवस एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के बारे में बताया।

पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के दौरान विशेष कार्य अधिकारी (ओएसडी), प्रधान निदेशक महोदय ने वर्ष 2024-25 के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु **वित्त एवं विनियोग अनुभाग** को **चल वैजयंती शील्ड** प्रदान की और हिंदी मौलिक टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना (2024-25) के विजेताओं को (क्रमशः प्रथम-₹5000, प्रथम-₹5000, द्वितीय-₹3000, द्वितीय-₹3000 एवं द्वितीय-₹3000) तथा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं (प्रथम-₹2500, द्वितीय-₹2000, तृतीय-₹1500 एवं चतुर्थ-₹1000) को प्रमाण-पत्र से सम्मानित करते हुए प्रोत्साहन/पुरस्कार राशि का भुगतान सीधे संबंधित कार्मिक के बैंक खाते में किया गया। विशेष कार्य अधिकार (ओएसडी), प्रधान निदेशक महोदय ने हिंदी पखवाड़ा-2025 के आयोजन समिति/निर्णायक मंडल के सभी सदस्यों को प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित करने के साथ-साथ सभी विजेताओं को हिंदी पखवाड़ा-2025 के सफल संचालन हेतु बधाईयां दी तथा हिंदी पखवाड़ा के आयोजन को इसी उत्साह और उमंग से जारी रखने के निदेश दिए।

तत्पश्चात सहायक निदेशक ने हिंदी पखवाड़ा-2025 के सफल आयोजन के लिए हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति, निर्णायक मंडल आदि, स्थापना अनुभाग, ईडीपी अनुभाग तथा सभी संबंधित को

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए भविष्य में पखवाड़े को ओर बेहतर बनाने के लिए कार्मिकों से सुझाव राजभाषा अनुभाग को भेजने का अनुरोध किया तथा इसके साथ ही पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह की समाप्ति की औपचारिक घोषणा की।

हिंदी पखवाड़ा - 2025 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के दौरान विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी), प्रधान निदेशक महोदयमौलिक टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना (2024-25) के विजेताओं को प्रमाण-पत्र को सम्मानित करते हुए











हिंदी पखवाड़ा - 2025 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के दौरान विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी), प्रधान निदेशक महोदय एवं कार्यालय के अन्य समूह अधिकारी, प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र को सम्मानित करते हुए



















हिंदी पखवाड़ा -2025 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के दौरान विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी), प्रधान निदेशक महोदय कार्यालय के वित्त एवं विनियोग अनुभाग को वर्ष 2024-25 के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु चल वैजयंती शील्ड से तथा हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति के सदस्यों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित करते हुए















हिंदी पखवाड़ा - 2025
मौलिक टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना (2024-25)
एवं
प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

मौलिक टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना (2024-25)



मसौदा एवं टिप्पण लेखन प्रतियोगिता



अनुवाद प्रतियोगिता



वाद-विवाद प्रतियोगिता



सार-लेखन प्रतियोगिता



प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता



प्राज्ञ परीक्षा परिणाम (जुलाई-नवंबर 2025 सत्र)



नामः- अभिनव कुमार

पदनामः- लेखापरीक्षक

प्राप्तांकः- 153/200 (76.50%)

पुरस्कार राशिः- ₹6,000/-

(12 माह की अवधि की वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन)



नामः- हेमंत गोयल

पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांकः- 148/200 (74.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹6,000/-

(12 माह की अवधि की वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन)



नामः- अक्षय शर्मा

पदनामः- सहायक पर्यवेक्षक

प्राप्तांकः- 147/200 (73.50%)

पुरस्कार राशिः- ₹6,000/-

(12 माह की अवधि की वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन)



नामः- नीलिमा भल्ला

पदनामः- पर्यवेक्षक

प्राप्तांकः- 146/200 (73.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹6,000/-

(12 माह की अवधि की वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन)



नामः- विशाखा जिंदल

पदनामः- लेखापरीक्षक

प्राप्तांकः- 133/200 (66.50%)

पुरस्कार राशिः- ₹4,000/-

(12 माह की अवधि की वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन)

पारंगत परीक्षा परिणाम (जुलाई-नवंबर 2025 सत्र)



नामः- संध्या

पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांकः- 167/200 (83.50%)

पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- निकिता गुप्ता

पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांकः- 164/200 (82.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- शिवांगी शर्मा

पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांकः- 162/200 (81.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- पूजा रावत

पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांकः- 160/200 (80.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- प्रिया शर्मा

पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांकः- 157/200 (78.50%)

पुरस्कार राशिः ₹10,000/-

पारंगत परीक्षा परिणाम (जुलाई-नवंबर 2025 सत्र)



नामः- प्रियांश केशरी
पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांकः- 151/200 (75.50%)
पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- हर्षिता पुरी
पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांकः- 149/200 (74.50%)
पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- अंश वर्मा
पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांकः- 149/200 (74.50%)
पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- शानू अग्रवाल
पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांकः- 146/200 (73.00%)
पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- सुमन दास
पदनामः- वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांकः- 145/200 (72.50%)
पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-

पारंगत परीक्षा परिणाम (जुलाई-नवंबर 2025 सत्र)



नामः- आकाश बंसल

पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांकः- 137/200 (68.50%)

पुरस्कार राशिः- ₹7,000/-



नामः- राहुल बिष्ट

पदनामः- सहायक पर्यवेक्षक

प्राप्तांकः- 128/200 (64.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹7,000/-



नामः- सौरभ कुमार राय

पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांकः- 120/200 (60.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹7,000/-

पारंगत परीक्षा परिणाम (जनवरी-मई 2026 सत्र)



नामः- दीपक नरवाल
पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांकः- 163/200 (81.50%)
पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- जुबिन राजपूत
पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांकः- 163/200 (81.50%)
पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- किशोर कुमार सांखला
पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांकः- 155/200 (77.50%)
पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- विवेक कुमार गुप्ता
पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांकः- 153/200 (76.50%)
पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-

पारंगत परीक्षा परिणाम (जनवरी-मई 2026 सत्र)



नामः- अभिषेक मीना

पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांकः- 148/200 (74.00%)

पुरस्कार राशिः ₹10,000/-



नामः- अभिनव कुमार

पदनामः- लेखापरीक्षक

प्राप्तांकः- 147/200 (73.50%)

पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- निलिमा भल्ला

पदनामः- पर्यवेक्षक

प्राप्तांकः- 146/200 (73.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- रूपल चौधरी

पदनामः- लेखापरीक्षक

प्राप्तांकः- 146/200 (73.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-

पारंगत परीक्षा परिणाम (जनवरी-मई 2026 सत्र)



नामः- विजय कुमार शर्मा

पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांकः- 144/200 (72.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- प्रभात कुमार

पदनामः- लेखापरीक्षक

प्राप्तांकः- 144/200 (72.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- हेमन्त मीना

पदनामः- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांकः- 143/200 (71.50%)

पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- राहुल यादव

पदनामः- लेखापरीक्षक

प्राप्तांकः- 143/200 (71.50%)

पुरस्कार राशिः- ₹10,000/-



नामः- विकास

पदनामः- लेखापरीक्षक

प्राप्तांकः- 132/200 (66.00%)

पुरस्कार राशिः- ₹7,000/-

दिनांक 07 मई 2025 को संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति के निरीक्षण कार्यक्रम की झलक

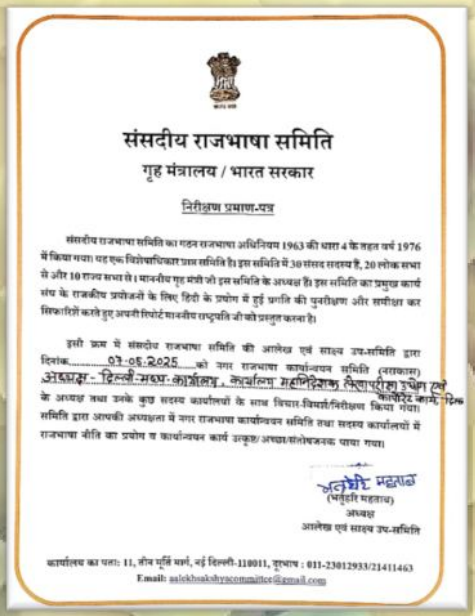

संसदीय राजभाषा समिति

गृह मंत्रालय / भारत सरकार

निरीक्षण प्रमाण-पत्र

संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 के तहत वर्ष 1976 में किया गया। यह एक विशेषाधिकार प्राप्त समिति है। इस समिति में 30 संसद सदस्य हैं, 20 लोक सभा से और 10 राज्य सभा से। माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं। इस समिति का प्रमुख कार्य संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति की पुनरीक्षण और समीक्षा कर सिफारिशें करते हुए अपनी रिपोर्ट माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत करना है।

इसी क्रम में संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति द्वारा दिनांक 07-05-2025 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) अध्यक्ष - दिल्ली-मध्य-कार्यालय, कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य, दिल्ली के अध्यक्ष तथा उनके कुछ सदस्य कार्यालयों के साथ विचार-विमर्श/निरीक्षण किया गया। समिति द्वारा आपकी अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा सदस्य कार्यालयों में राजभाषा नीति का प्रयोग व कार्यान्वयन कार्य उत्कृष्ट/अच्छा/संतोषजनक पाया गया।

भर्तृहरि महताब
(भर्तृहरि महताब)
अध्यक्ष
आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति

कार्यालय का पता: 11, तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली-110011, दूरभाष : 011-23012933/21411463
Email: aalekhsakshyacommittee@gmail.com




















punjab national bank
एस. आह्लादिनी पंडा
राजवीर




माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति द्वारा दिल्ली, बुलन्दशहर, मथुरा एवं मुरादाबाद स्थित
केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों/संस्थानों आदि के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम
दिनांक 7 मई 2025, स्थान नई दिल्ली

दिनांक 07 मई 2025 को संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति के अध्यक्ष के कर-कमलों से कार्यालय की पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ अंक-5 2024" का निरीक्षण कार्यक्रम के दौरान विमोचन







नव इन्द्रप्रस्थ अंक-5 2024 के अभिमत

3441512/2025/HINDI

सं. स.-50/ दिनांक :-01-

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(अवसंरचना), नई दिल्ली
तृतीय तल, ए-स्कन्ध, इन्द्रप्रस्थ भवन,
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002
प्रशा./हिंदी अनुभाग/ 141/ हिंदी पत्रिका/ 2025/ 5899

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (INFRASTRUCTURE), NEW DELHI
3rd Floor, A-Wing, Indraprastha Bhawan,
I.P. Estate, New Delhi-110002

दिनांक / DATE 26/08/2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (रा.भा.)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट
नई दिल्ली-110002

विषयः वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ" के अंक-5 हेतु प्रशंसा पत्र।

महोदय,

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ" के पंचम अंक के संस्करण की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। रचनाओं की गुणवत्ता, भाषा की सहजता तथा प्रस्तुति की उत्कृष्टता इस पत्रिका को विशेष बनाती है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सराहनीय हैं, मुख्यतः सुश्री हेमलता शर्मा की 'बचपन', श्री रोहित माथुर की 'हम है सरकारी कर्मचारी', श्री मोनू जांगिड की 'सफर रेलवे पुल से भाषाई पुल(अनुवाद) तक का' एवं श्री अनिल कुमार की 'परवरिश' चिंताकर्षक है। इतनी उत्तम कृतियों के लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल की सराहना की जाती है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'संवाद' पत्रिका की ओर से शुभकामनाएँ।

मोनू जांगिड
1 सितंबर 2025

भवदीया,

सहायक निदेशक(रा.भा.)
राजभाषा अनुभाग

Phone: 011-23378473 68 E-mail : pdainfradl@cag.gov.in

File No. राभा./प्रशा./लोकहितार्थ/12/2024-25 (Computer No. 296374)
Generated from eOffice by Manu Jangir, JTO (RAJBHASHA) MJ, JUNIOR TRANSLATION OFFICER, PD (Audit)-ESM on 25/08/2025 03:00 pm

Scanned with OKEN Scanner

संलेप.II(हिंदी कक्ष)/PD(Audit)-ESM I/1091342/2025

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम - 695 001

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

सं.लेप.II/हिंदी कक्ष/ पत्रिका/ 2025-26 दिनांक : 18-08-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (रा. भा.),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली – 110002

विषय:- पत्रिका की पावती – बाबत्

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "नव इंद्रप्रस्थ" के अंक-5 की प्रति प्राप्त हुई, सहस्र धन्यवाद । पत्रिका में समाहित सामग्री ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय है । सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई ।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, मनोरंजक एवं लाभप्रद हैं, विशेषकर, श्री मोहन चन्द्र द्वारा रचित लेख 'देश बदल रहा है', श्री मोनू जांगिड द्वारा रचित लेख 'सफर रेलवे पुल से भाषाई पुल (अनुवाद) तक का' तथा सुश्री हेमलता शर्मा द्वारा रचित कविता 'बचपन' एवं श्री भूपेन्द्र सिंह राणा द्वारा रचित कविता 'बेटी' अत्यंत सराहनीय हैं । पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई ।

शुभकामनाएँ ।

भवदीया,

Digitally signed by
A M Bhadrambika
Date: 18-08-2025
12:10:57

सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष / Telephone :0471 – 2330899 ई-मेल / e-mail : agaukerala2@cag.gov.in फैक्स / Fax – 0471-2332022
वेबसाइट / Website : https://cag.gov.in/ag2/kerala/en

63

File No. राभा./प्रशा./लोकहितार्थ/12/2024-25 (Computer No. 296374)
Generated from eOffice by Manu Jangir, JTO (RAJBHASHA) MJ, JUNIOR TRANSLATION OFFICER, PD (Audit)-ESM on 25/08/2025 03:00 pm

---

राजभाषा/प्रशा./प्रशा./लोकहितार्थ/12/2024-25 I/1103248/2025

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले व ह)-II,
महाराष्ट्र
विविध लाईन्स, नागपुर - ४४०००१
OFFICE OF
THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(A&E)-II MAHARASHTRA
DIVN. LINES, NAGPUR - 440 001
Ph: 0712-2565161-67 / Fax: 0712 - 2560484
Email: agae2Maharashtra2@cag.gov.in
Web: https://cag.gov.in/ae/nagpur/en

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सं. राजभाषा/प्र.प/2025-26 जा.क्रं-37 दिनांक- 25/08/2025

सेवा में,

संपादक एवं सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य ऑडिट भवन
आई.पी.एस्टेट
नई दिल्ली-110002

विषयः आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ अंक-5,2024" (ई-पत्रिका) हेतु प्रतिभाव पत्र संबंधी।

महोदया/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ अंक-5, 2024" (ई-पत्रिका) इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। इस अंक में प्रकाशित पद्य खण्ड में "बचपन", "हम है सरकारी कर्मचारी", "भारत एक विश्वगुरु", "पक्षी और वातावरण" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। साथ ही गद्य खंड में "सफर रेलवे पुल से भाषाई पुल (अनुवाद) तक का", "नवयुवकों में बॉडी बिल्डिंग का बढ़ता क्रेज: एक नई जीवनशैली", "क्या यह संसार असत्य है?" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

58

File No. राभा./प्रशा./लोकहितार्थ/12/2024-25 (Computer No. 296374)
Generated from eOffice by Manu Jangir, JTO (RAJBHASHA) MJ, JUNIOR TRANSLATION OFFICER, PD (Audit)-ESM on 25/08/2025 03:00 pm

---

3307287/2025/R&I

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय व्यय),
ऑडिट भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली–110002

001013

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL EXPENDITURE),
AUDIT BHAWAN, INDRAPRASTHA ESTATE,
NEW DELHI-110002

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2025-26/321 दिनांक: 28.08.2025

सेवा में,

28 AUG 2025

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, (उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य)
ऑडिट भवन, आई. पी. एस्टेट, नई दिल्ली – 110 002

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ" के 5वें अंक के संबंध में।

महोदय,

दिनांक 28.07.2025 को इमेल द्वारा प्राप्त आपके पत्र में संलग्न आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ" के 5वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री सुभम शर्मा की कहानी "क्या यह संसार असत्य है?", श्री हेमराज मीना का लेख "ई-ऑफिस का परिचय" एवं श्री रितेश कुमार का लेख "बच्चों के लिए समर कैंप" बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं अत्यंत सराहनीय हैं।

इसके अतिरिक्त श्री रोहित माथुर की "हम हैं सरकारी कर्मचारी", श्री मानवेन्द्र झा की "मेरा मानना है" तथा समीर आसिफ़ की "भारत: एक विश्वगुरु" कविता पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

पूजा 28/8

सहायक निदेशक (राजभाषा)

60

File No. दूरभाष / Telephone : 91-11-23702422 फैक्स / Fax : 91-11-23702271, ई-मेल /E-mail : dgace@cag.gov.in
Generated from eOffice by Manu Jangir, JTO (RAJBHASHA) MJ, JUNIOR TRANSLATION OFFICER, PD (Audit)-ESM on 25/08/2025 03:00 pm

3270145(1)/2025/PD (Audit)-ESM

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI

सं.-प्रशंसा पत्र/09/2025-26/54 दिनांक:- 19.08.2025

सेवा में,
संपादक एवं सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य, नई दिल्ली

विषय : कार्यालयीन पत्रिका "नव इंद्रप्रस्थ" के अंक-5 2024 की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपकी कार्यालयीन पत्रिका "नव इंद्रप्रस्थ" के अंक-5 2024 की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"नव इंद्रप्रस्थ" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत सुखद व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है। इनमें से "हम है सरकारी कर्मचारी", "सुनो लड़की/सुनो लड़के", "पक्षी और वातावरण" और "देश बदल रहा है" विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

19/8/25

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

24

File No. [illegible]/12/2024-25 (Computer No. 296374)
Generated from eOffice by Monu Jangir, JTO (RAJBHASHA) MJ, JUNIOR TRANSLATION OFFICER, PD (Audit)-ESM on 25/09/2026 03:00 pm

---

3284079/2025/HINDI

सा. सं. 30/दिनांक 06/8/2025

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा (II), पश्चिम बंगाल
[illegible]
[illegible]
कोलकाता - 700 054

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL, AUDIT (II), WEST BENGAL
CGO COMPLEX (7TH FLOOR), BF BLOCK, SECTOR I
SALT LAKE CITY
KOLKATA - 700 064

संख्या:- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/54 दिनांक:- 01/08/25

सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य, ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110002

To,
The Assistant Director/ O.L.
Office of the Pr. Director of Audit,
Industry and Corporate Affairs, Audit Bhawan
I.P. Estate, New Delhi-110002

01 AUG 2025

विषय: कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ" अंक-5 2024 (ई-पत्रिका) के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **"नव इन्द्रप्रस्थ" अंक-5 2024 (ई-पत्रिका)** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो है- बचपन, बेटी, मेरा मानना है, परवरिश, पक्षी और वातावरण, ई-ऑफिस का परिचय तथा देश बदल रहा है आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

01.08.25

सहायक निदेशक (रा.भा.)/ हिंदी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

50

File No. [illegible]/12/2024-25 (Computer No. 296374)
Generated from eOffice by Monu Jangir, JTO (RAJBHASHA) MJ, JUNIOR TRANSLATION OFFICER, PD (Audit)-ESM on 25/09/2026 03:00 pm

CamScanner

I/1072531/2025

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ
तृतीय तल, ऑडिट भवन, टीसी-35-वी-1,
विभूति खंड, गोमती नगर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश - 226 010

Office of the Principal Director of Audit (Central), Lucknow
IIIrd Floor, Audit Bhawan, TC-35-V-1,
Vibhuti Khand, Gomti Nagar,
Lucknow, Uttar Pradesh - 226 010

पत्रांक सं.: प्र.नि.ले.प.(के.)/प्रशासन/रा.भा.हि./फा.सं. 82047/2025-26/I/1072531/2025
दिनांक: 04-08-2025

सेवा में,
संपादक एवं सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
नई दिल्ली-110002

विषय - हिन्दी ई-पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ" के 5वें अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ" के 5वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।
पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर "बचपन", "परवरिश" एवं "पक्षी और वातावरण" सारगर्भित एवं सराहनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

भवदीया,

Digitally signed by
Leena Dariyal
Date: 04-08-2025
11:30:04

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन

Phone: 0522-2970789, 2989000 Fax: 0522-2970780 Email: pdaclucknow@cag.gov.in

40

File No. [illegible]/12/2024-25 (Computer No. 296374)
Generated from eOffice by Monu Jangir, JTO (RAJBHASHA) MJ, JUNIOR TRANSLATION OFFICER, PD (Audit)-ESM on 25/09/2026 03:00 pm

3253995/2025/PD (Audit)-ESM

फाईलसं.हि.अ./ले.एवंहक./05/परिचक्रप्रतिभाग/2024-25 I/10713S2/2025

प्रधान महालेखाकार (ले&हक़) का कार्यालय
बीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार – 800001

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIRCHAND PATEL PATH PATNA, BIHAR - 800001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ समर्पित
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक/ Letter No.:- हि.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिभाग/25-26/ 54
दिनांक/Date:- 04.08.2025

सेवा में,

संपादक एवं सहायक निदेशक (रा.भा.),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
दिल्ली-110002

विषय- हिंदी पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ अंक-5 2024" की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ" के 5वें अंक की सॉफ्ट प्रति ई-मेल के द्वारा प्राप्त हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय एवं उत्कृष्ट हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। बचपन, पक्षी और वातावरण, क्या यह संसार असत्य है? एवं सफर रेलवे पुल से भाखड़ा पुल (अनुवाद) तक ये कृतियाँ बेहद रुचिकर हैं।

पत्रिका को राजभाषा हिंदी के उत्थान के लिए सतत् एवं प्रभावकारी सिद्ध होने हेतु बधाई। पत्रिका के संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हिंदी के प्रति अगाध प्रेम और अथक निष्ठा के लिए हृदय से धन्यवाद एवं हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

Digitally signed by SUNIL KUMAR
Date: 01-08-2025 17:22:56

सहायक निदेशक (राजभाषा)

Phone: 0612-2223694 Fax: 0612-2223056 Email: agaebihar@cag.gov.in

28

File No. हि.अ./ले./पत्रिकाप्रतिभाग/12/2024-25 (Computer No. 256374)
Generated from eOffice by Monu Jangir, JTO (RAJBHASHA) MJ, JUNIOR TRANSLATION OFFICER, PD (Audit)-ESM on 25/09/2025 03:00 pm

3270145/2025/PD (Audit)-ESM

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI

सं.-प्रशंसा पत्र/09/2025-26/54 दिनांक:- 09.08.2025

सेवा में,

संपादक एवं सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य, नई दिल्ली

विषय : कार्यालयीन पत्रिका "नव इंद्रप्रस्थ" के अंक-5 2024 की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपकी कार्यालयीन पत्रिका "नव इंद्रप्रस्थ" के अंक-5 2024 की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"नव इंद्रप्रस्थ" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत सुखद व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है। इनमें से "हम है सरकारी कर्मचारी", "सुनो लड़की/सुनो लड़के", "पक्षी और वातावरण" और "देश बदल रहा है" विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

62

File No. हि.अ./ले./पत्रिकाप्रतिभाग/12/2024-25 (Computer No. 256374)
Generated from eOffice by Monu Jangir, JTO (RAJBHASHA) MJ, JUNIOR TRANSLATION OFFICER, PD (Audit)-ESM on 25/09/2025 03:00 pm

3284033/2025/HINDI

सा: क्रमां. सं. 51. 25/ हिंपत्रि.-31.02.2026

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केन्द्रीय), मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL) MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
e-mail – pdacentralmumbai@cag.gov.in

सं. प्र.नि.ले.प.(के.)/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/ अ.सं I/1067204/2025 दिनांक 30-07-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन,आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली
विषय: कार्यालयीन पत्रिका "नव इंद्रप्रस्थ" के पंचम अंक की समीक्षा संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "नव इंद्रप्रस्थ" के पंचम अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्र धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक हैं। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं विशेष उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्र.सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री मोनू जांगिड़	सफर रेलवे पुल से भाखड़ा पुल (अनुवाद) तक का
2.	नीजात	कविकेसा और हरीदर की चाय : एक अद्भुत एवं रोमांचकारी अनुभव
3.	श्री रोहित कुमार	हम हैं सरकारी कर्मचारी
4.	श्री मनजेंद्र सिंह	मेरा मानना है, बजट
5.	श्री तितेश कुमार	धरती के लिए समर कैंप का महत्व, नव युवकों के बीहेवियरिज्म का बदलता केज : एक नई जीवन शैली
6.	हिमांशु प्रिय तिवारी	हरी- अस्तित्व की पहचान

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

SUMITH S

व.ले.प.अ./राजभाषा

मोनू जांगिड़
31 जनवरी 2025

1

File No. [illegible]

52

File No. हि.अ./ले./पत्रिकाप्रतिभाग/12/2024-25 (Computer No. 256374)
Generated from eOffice by Monu Jangir, JTO (RAJBHASHA) MJ, JUNIOR TRANSLATION OFFICER, PD (Audit)-ESM on 25/09/2025 03:00 pm

CamScanner

हिंदी पत्रिका समीक्षा (Audit)-ESM/हि.अ.क.25/14.09.2021 I/1081888/2025

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
E mail-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-रा.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/I/1081888/2025 दिनांक:08-08-2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट
नई दिल्ली-110002.

विषय:- हिंदी पत्रिका 'नव इन्द्रप्रस्थ' के 5वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "नव इन्द्रप्रस्थ" के 5 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुरुचिपूर्ण, वैचारिक तथा उच्चकोटि की हैं विशेषकर श्री रोहित माथुर की "हम हैं सरकारी कर्मचारी", श्री मोनू जांगिड़ की "सफर रेलवे पुल से भाखड़ा पुल(अनुवाद) तक का" एवं श्री सुधम शर्मा की "क्या यह संसार असत्य है ?" आदि रचनाएँ अत्यंत ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

36

File No. हि.अ./ले./पत्रिकाप्रतिभाग/12/2024-25 (Computer No. 256374)
Generated from eOffice by Monu Jangir, JTO (RAJBHASHA) MJ, JUNIOR TRANSLATION OFFICER, PD (Audit)-ESM on 25/09/2025 03:00 pm

अभिमत

"आपके स्नेह के हम आभारी हैं कि आपने हमें अपने अभिमत भेजे। पत्रिका के बेहतर भविष्य के लिए इसी प्रकार अपनी राय एवं सुधार संबंधित सुझाव देकर हमारा उचित मार्गदर्शन करते रहें।"

रचनाकारों से अनुरोध

- नव इन्द्रप्रस्थ के अगले अंक के लिए सभी रचनाओं का स्वागत है।
- कृपया रचनाकार अपने मौलिक, अप्रकाशित, अप्रसारित एवं श्रेष्ठ रचनाएं प्रकाशन के लिए भेजें।
- रचना के साथ अपने 02 पासपोर्ट साइज फोटो तथा रचना की मौलिकता एवं अप्रकाशित होने का प्रमाण पत्र अवश्य लगाएं।
- सुपाठ्य रचनाएं कागज की एक और 02 टंकित/लिखित प्रतियाँ (सॉफ्ट/हार्ड) सहित भेजें।
- रचना का उपयुक्त शीर्षक दिया हो।
- रचनाकार रचना भेजते समय उसकी एक प्रति अपने पास भी सुरक्षित रख लें।

*कार्यालय एवं राजभाषा संबंधित लेखों का विशेष रूप से स्वागत है।

संपादक

(नव इन्द्रप्रस्थ)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,

ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट,

नई दिल्ली - 110002

फोन. नं. 011-23702357

ई-मेलः pdaica@cag.gov.in



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट
नई दिल्ली - 110002